



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन
प्रथम भाषा हिंदी
Hindi First Language

Part - 2



आठवीं कक्षा
Eighth Standard

Karnataka Textbook Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.सं	शीर्षक	विधा	पृ.सं
12.	कित्तूर का किला	कहानी	1
13.	कसौटी	कविता	8
14.	ईदगाह	कहानी	13
15.	यक्षगान	लेख	29
	दिशा ज्ञान	पूरक वाचन	38
16.	वीर	कविता	43
17.	बैलगाड़ी	रेखाचित्र	48
18.	ऐसे-ऐसे	एकांकी	59
19.	रहीम के दोहे	दोहे	73
	परिशिष्ट: 1. व्याकरण 2. पत्र-लेखन		89

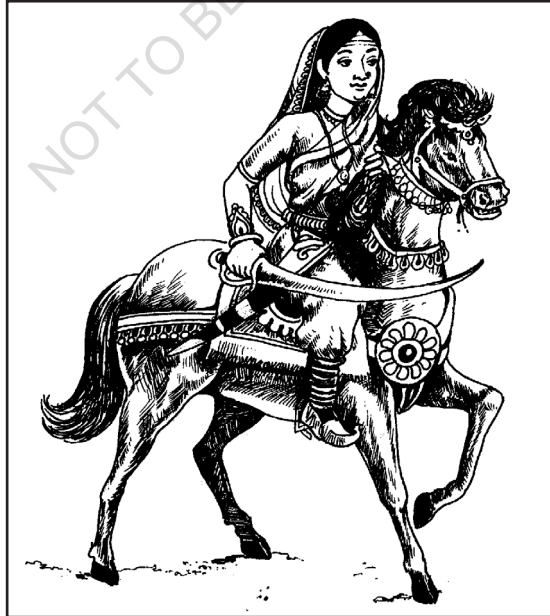
कितूर का किला



- संकलित

आशय : कर्नाटक के प्रसिद्ध किलों में कितूर के ऐतिहासिक किले का परिचय इस निबंध में दिया गया है।

भारत देश वीरों का देश है। यहाँ के वीरों ने देश की रक्षा में हँसते - हँसते प्राण दे दिए हैं। इन वीरों की कहानियाँ सुनकर तुम्हें गर्व होगा। महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कहानी तो तुमने सुनी ही होगी। आओ, तुम्हें ऐसी ही एक और कहानी सुनाएँ। यह कहानी है रानी चेन्नम्मा की। चेन्नम्मा ने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अंग्रेज़ों से लोहा लिया था।



चेन्नम्मा कित्तूर की रानी थी। कित्तूर के किले पर इसीका अधिकार था। यह किला हर दृष्टि से सुरक्षित था। कित्तूर अब पहले जैसा नहीं रह गया है। पहले यह राज्य था तीन सौ उनसठ गाँवों और बहत्तर किलों का। तब इसकी शोभा विचित्र थी।

खास कित्तूर में एक विशाल किला था। इसे कित्तूर का किला कहते हैं। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले की बात है। देसाई वंश के मल्लसर्ज यहाँ के राजा थे। वे बड़े बहादुर थे। उनकी दो रानियाँ थीं। चेन्नम्मा छोटी रानी थी। बचपन में ही उसने तलवार चलाना, घोड़े की सवारी करना सीख लिया था। चेन्नम्मा की कोई संतान नहीं थी।

कित्तूर छोटा-सा गाँव होते हुए भी वहाँ के खंडहर रानी चेन्नम्मा और संगोल्ली रायण्णा जैसे वीरों के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। किले की मिट्टी की दीवार सात फुट चौड़ी है। यह किला ऊँचाई पर रहने के कारण, मीलों दूर तक दिखाई देता है। किले की भव्यता का वर्णन करते हुए अंग्रेज़ इतिहासकारों ने लिखा है कि - “यह एक असाधारण किला रहा होगा।” किले की विशालता आज भी देखी जा सकती है। बाहरी प्रांगण लगभग सौ फुट लंबा है और तीस फुट चौड़ा है। छत में लकड़ी की कारीगरी देखते ही बनती है।

मल्लसर्ज की मृत्यु के बाद राज्य का भार चेन्नम्मा के कंधे पर आ गया। उस समय लार्ड हेस्टिंग्स भारत का गवर्नर जनरल था। अंग्रेज़ों की नीति आप जानते ही हैं। भारत को वे लूटना चाहते थे। चेन्नम्मा दूरदर्शी महिला थी। वह जान गई कि किसी दिन अंग्रेज़ कित्तूर के किले पर हमला करेंगे।

इसलिए उसने किले की सुरक्षा का पूरा इन्तजाम कर लिया। लड़ने के लिए हथियार मँगा लिये, पर्याप्त भोजन-सामग्री इकट्ठी कर ली। इसलिए कि अगर दुश्मन किले को घेर लें तो काफी दिनों तक खाने की कमी न हो।

रानी ने एक बच्चे को गोद लेकर उत्तराधिकारी बना दिया। इसकी खबर तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर थैकरे के पास पहुँची। वह तो बहाना खोज ही रहा था। फिर क्या था ! किले पर चढ़ आया। रानी के पास उसने एक पत्र भिजवाया-“मैं आपसे राज्य के मामले में कुछ बात करना चाहता हूँ।” रानी ने कहलाया- “मैं लड़ाई के मैदान में इसका उत्तर दूँगी।”



अंग्रेजों के लिए यह चुनौती थी। थैकरे बौखला उठा। रानी ने किन्नूर के किले का दरवाजा बन्द करा दिया। वह स्वयं तलवार लेकर किले

के बर्ज पर चढ़ गई और अपने सिपाहियों को लड़ने के लिए ललकारने लगी। उसकी बहादुरी के सामने दुश्मन थोड़ी देर के लिए लाचार हो गये।

अचानक एक उपाय उन्हें सूझा। उनके पास बड़ी-बड़ी तोपें थीं। उन्होंने तोप से किले का फाटक उड़ा दिया। उनकी सेना घुसने लगी। तभी रानी चेन्नम्मा पति की तलवार लेकर दरवाजे पर आ डटी। उसने भीषण मार-काट मचाई। अंग्रेज़ी दहल गए। उन्हें मुँह की खानी पड़ी। थैकरे मार डाला गया। अंग्रेज़ी सेना भाग खड़ी हुई। कित्तूर का किला रानी की विजय पर मुस्कुरा उठा।

लेकिन यह झगड़े का अंत नहीं था। किले की मुस्कुराहट आह में बदल गई। अपनी हार से अंग्रेज़ी अधिकारी तिलमिला उठे थे। थोड़े ही दिनों में भारी सेना लेकर वे फिर किले पर आ धमके। तलवारें चमक उठीं, तोपों से आग निकलने लगी, हज़ारों की संख्या में सैनिक घायल हुए।

किले में खाने का सामान खत्म हो गया। आखिर कब तक भीतर बन्द रहा जाता। रानी ने पुरुष का वेश धारण किया और दरवाजे पर आ डटी। घमासान लड़ाई हुई। इसी बीच रानी के कुछ साथियों ने गद्दारी की। उन्होंने किले का फाटक खोल दिया। अंग्रेज़ी सेना किले के अंदर घुस गई। रानी बन्दी बना ली गई।

किले में कीमती खजाना था। अंग्रेज़ों ने उसे लूट लिया। किले को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। इस प्रकार कित्तूर के किले की कहानी सबसे दर्दनाक है।

शब्दार्थ :

लोहा लेना - युद्ध करना, कंधे पर आना - जिम्मेदारी आना,
हमला - आक्रमण, इन्तजाम - व्यवस्था, तैयारी; बहाना - कारण,
मुँह की खाना - हार मानना, खज़ाना - कोष, बौखला उठना - गुस्से
में आना।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) कित्तूर के किले की दीवार की चौड़ाई कितनी है ?
- २) पहले कित्तूर का विस्तार कितना था ?
- ३) लार्ड हेस्टिंग्स कौन था ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

- १) कित्तूर की रानी कौन थी ?
- २) कित्तूर पर किसका अधिकार था ?
- ३) राजा मल्लसर्ज किस वंश के थे ?
- ४) राजा मल्लसर्ज की कितनी रानियाँ थीं ?
- ५) चेन्नम्मा ने किससे लोहा लिया था ?
- ६) पहले कित्तूर का विस्तार कितना था ?
- ७) कित्तूर किले के बारे में अंग्रेजे इतिहासकारों ने क्या कहा है ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए :

- १) कित्तूर के किले का वर्णन कीजिए।
- २) चेन्नम्मा एक दूरदर्शी महिला थी, कैसे ?

- ३) थैकरे ने कित्तूर पर आक्रमण क्यों किया, उसका परिणाम क्या हुआ ?
- ४) रानी चेन्नम्मा ने कित्तूर की रक्षा किस प्रकार की ?
- ५) कित्तूर के किले की कहानी दर्दनाक है, कैसे ?

IV. किसने, किससे कहा ?

- १) “मैं आपसे राज्य के मामले में कुछ बात करना चाहता हूँ।”
- २) “मैं लड़ाई के मैदान में इसका उत्तर दूँगी।”

V. निम्नलिखित पंक्तियों को कहनेवाले प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम लिखिए :

- १) “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।”
- २) “स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।”
- ३) “जन-गण मन अधिनायक जय हे।”
- ४) “सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।”
- ५) “करो या मरो।”

भाषा - बोध

क) इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

- १) इंतज़ाम २) इकट्ठा ३) हमला ४) खोज ५) गद्दारी

ख) इन शब्दों के अन्य वचन रूप लिखिए :

- १) कहानी २) किला ३) रानी
- ४) कंधा ५) तलवार ६) बच्चा

ग) इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

- | | | |
|-----------|---------|----------|
| १) चढ़ना | २) विजय | ३) विशाल |
| ४) दुश्मन | ५) अंत | ६) उत्तर |

घ) रेखांकित कारकों के नाम लिखिए :

उदाहरण : बंदर पेड़ पर बैठा है। - अधिकरण कारक

- १) लडकियाँ गेंद से खेल रही हैं।
- २) सैनिक घोड़े पर सवार है।
- ३) राम का बस्ता कक्षा में रह गया।
- ४) बच्चों को खाना खिला दो।
- ५) राधा पूजा के लिए फूल ले जा रही है।

योग्यता - विस्तार :

- * अपने अध्यापक से कर्नाटक के अन्य किलों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- * कुछ किलों के चित्रों का संग्रह कर एक अलबम बनाइए।

कसौटी



- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

आशय : मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन के हर क्षेत्र में ऐसा कार्य करें कि जीवन की कसौटी पर खरा उतरे। जीवन में रूप को महत्व न देकर गुणों को महत्व देना चाहिए।

साँवला कोई हो तो क्या ।
अगर हो ढंगों में ढाला ॥
करेगा क्या गोरा मुखड़ा ।
जो किसी का दिल हो काला ॥१॥

बड़ी हों या होवें छोटी ।
भले ही रहें न रसवाली ॥
चाहिए वे आँखें हमको ।
प्यार की हो जिनमें लाली ॥२॥

भरा होवे उनमें जादू ।
न रक्खें वे अपना सानी ॥
क्या करें ऐसी आँखें ले ।
गिर गया है जिनका पानी ॥३॥

न जिसमें दर्द मिला, ऐसे ।
आँख में आँसू क्यों आये ॥

हित महक जो न मिल सकी तो ।
फूल क्या मुँह से झड़ पाये ॥४॥

क्या करे लेकर के कोई ।
किसी का रूप-रंग ऐसा ॥
फूल-सा हो करके भी जो ।
खटकता है काँटों जैसा ॥५॥

आदमियत जो खो अपनी ।
काम रखते मतलब से हैं ॥
भले ही गोरे चिट्टे हों ।
आबनूसी कुन्दे वे हैं ॥६॥

न बिगड़े रंगत, रंगत से ।
न मन हो तन पर मतवाला ॥
भूल में हमको क्यों डाले ।
किसी का मुख भोला-भाला ॥७॥

रूप के हाथ न बिक जायें ।
न सुख देवें लेकर दुखड़ा ॥
काठ से अगर पड़ा पाला ।
क्या करेगा सुडौल मुखड़ा ॥८॥

कवि परिचय - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (१८६५-१९४७)

अयोध्यासिंह उपाध्याय जी का जन्म आजमगढ़, जिला निज़ामाबाद में हुआ । आप वहीं वर्नाक्युलर की परीक्षा पास करके मिडिल स्कूल के अध्यापक बने । उस पद को इस्तीफा देकर कुछ दिन बाद

मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन प्रारंभ किया। प्रारंभ में आप ब्रजभाषा में कविता लिखते थे, बाद में खड़ीबोली में रचना की। आपका 'प्रियप्रवास' खड़ीबोली का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इसके अलावा आपने 'रस-कलश', 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' 'अधखिला फूल' आदि कृतियों की रचना की है। आपके काव्य में वात्सल्य और शृंगार की प्रधानता है। आपने मुहावरों और अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है।

शब्दार्थ :

कसौटी - खरेपन का पता लगाना, साँवला - श्याम वर्ण, काला; ढाल - तलवार, भाला आदि का वार रोकने का साधन; मुखड़ा - मुख, चेहरा; लाली - सुखी, इज्जत; सानी - अपनी बराबरी का, महक - सुगंध, झड़ना - निकलना, खटकना - दुख देना, आदमियत - मनुष्यता, खोज - पता लगाना, आबनूसी कुंदा - काले रंग की लकड़ी, रंगत - रंग, वर्ण; भोला - सरल, अबोध; दुखड़ा - दुःख, काठ - लकड़ी, सुडौल - सुंदर।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) 'कसौटी' कविता के कवि कौन हैं ?
- २) कसौटी का अर्थ क्या है ?
- ३) आँखों में कौन-सा भाव रहना ज़रूरी है ?
- ४) हमें किसके हाथ नहीं बिकना चाहिए ?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) साँवला होने पर भी क्या होना ज़रूरी है ?
- २) आँखों में कैसा भाव रहना चाहिए ?
- ३) फूल-सा होकर भी किसके जैसे खटकता है ?
- ४) भोला-भाला मुख हमें किसमें डाल सकता है ?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए:

- १) आँखें सुन्दर होने पर भी कब बुरी लगती हैं ?
- २) सुन्दर रूप-रंगवाला व्यक्ति भी कब बुरा लगता है ?
- ३) कौन आबनूसी कुन्दा लगता है ?
- ४) इस कविता का मुख्य भाव क्या है ?

IV. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

- क) बड़ी हों या होवें छोटी ।
भले ही रहें न रसवाली ॥
चाहिए वे आँखें हमको ।
प्यार की हो जिनमें लाली ॥
- ख) न बिगड़े रंगत, रंगत से ।
न मन हो तन पर मतवाला ॥
भूल में हमको क्यों डाले ।
किसी का मुख भोला-भाला ॥
- ग) आदमियत जो खो अपनी
काम रखते मतलब से हैं ॥

भले ही गोरे चिट्ठे हों ।
आबनूसी कुन्दे वे हैं ॥

V. निम्नलिखित पंक्तियों की पूर्ति कीजिए :

क) साँवला ।
..... ॥
..... ।
..... काला ॥

ख) क्या करे ।
..... ॥
..... ।
..... जैसा ॥

VI. जोड़कर लिखिए :

- | | |
|----------------|----------------|
| १) भले ही रहें | अ) जो खो अपनी |
| २) भरा होवे | आ) न बिक जायें |
| ३) रूप के हाथ | इ) उनमें जादू |
| ४) आदमियत | ई) न रसवाली |

योग्यता - विस्तार

- * अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की अन्य कविताएँ पढ़िए ।
- * 'संघर्षमय जीवन' के बारे में दस वाक्य लिखिए ।

ईदगाह

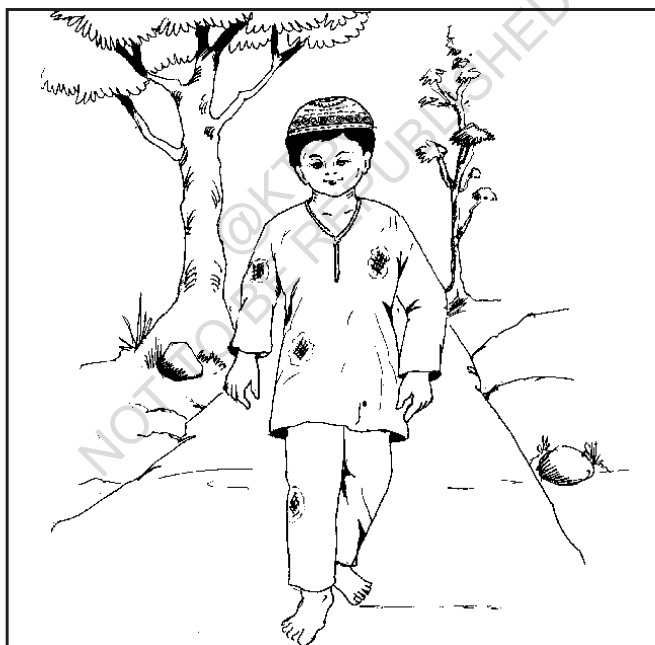


- प्रेमचंद

आशय : प्रेमचन्द की यह कहानी एक मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर संवेदनात्मक रीति से लिखी गई है। गरीब होते हुए भी 'ईद' के त्योहार पर अपनी विवेकशीलता से 'हामिद' का अपनी दादी के लिए एक चिमटा खरीदना - कहानी का केन्द्र बिन्दु है।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है! आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं हैं, पड़ोस के घर से सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जा रहा है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर से पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है।

बार-बार जेब से अपना खज़ाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक.... दो.... दस.... बारह। मोहसिन के पास एक... दो...तीन... आठ... नौ... पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीज़ें लाएँगे - खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या। और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद ! गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया। फिर एक दिन माँ भी पीली होकर मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है।

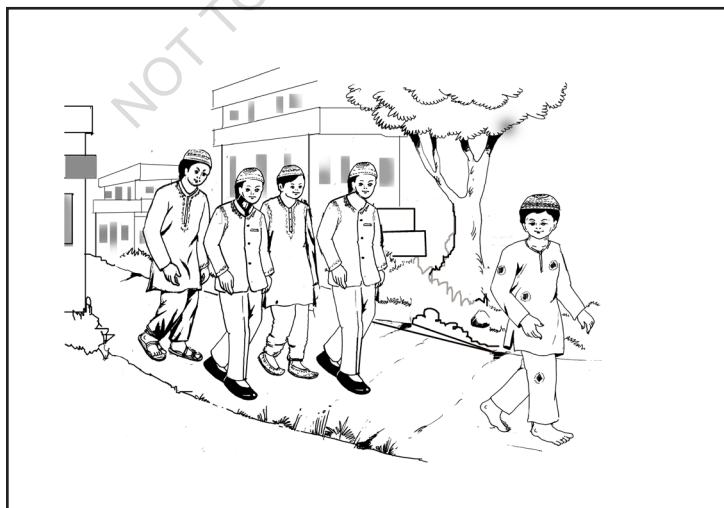


हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। अभागिन अमीना कोठरी में बैठी रो रही है। ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को ?

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवाय और कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे ? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा ? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं-सी जान, तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। कुल दो आने पैसे रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार ? अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए।

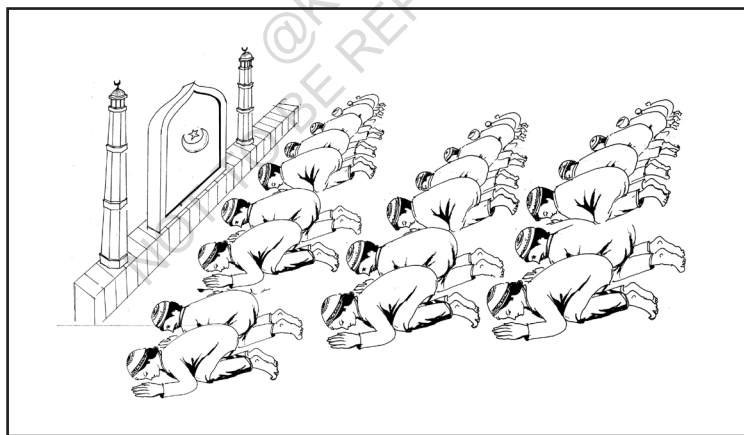
हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है, “तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा।”

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी चला। कभी सब-के-सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथियों का इन्तज़ार करते। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है क्या ?



बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब घर है। आगे चले। हलवाईयों की दुकानें शुरू हुईं। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है? देखो न, एक-एक दुकान पर मनो होंगी।

सहसा ईदगाह नज़र आया। इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फ़र्श है, उस पर जाज़िम बिछी हुई है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इन ग्रामीणों ने भी वज़ू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था! हज़ारों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं। फिर सब-के-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। मानो भ्रातृत्व का सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।



नमाज़ हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। अब मिठाइयों और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिण्डोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चरखी है। लकड़ी के हाथी, घोड़े और ऊँट छड़ों

से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ, पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन पैसे ही तो उसके पास हैं। वह अपने कोष का एक-तिहाई ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चरखियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं - सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिंती और धोबिन। वाह ! लगता है सब बोल-ना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिंती पसन्द आया। कमर झुकी हुई, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है ! शायद कोई गीत गा रहा है। बस मशक से पानी उँड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहा है। ये सब दो-दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने कैसे ले ? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने किस काम के ? उन्हें लेकर वह क्या करेगा ?

खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसीने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से अलग है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता ? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं है। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे खयाल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तब से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे तो कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौनों से क्या फ़ायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। ज़रा देर की खुशी होती है। फिर तो खिलौनों की ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखता। या फिर घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूटकर बराबर हो जाएँगे। चिमटा कितने काम की चीज़ है ! रोटियाँ तब से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आए तो झटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्मा बेचारी को कहाँ फ़ुरसत है कि बाज़ार जाए और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं ? रोज़ हाथ जला लेती हैं।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब-के-सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसीने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ चलो। मेरा यह काम करो, मेरा वह काम करो। अब अगर किसी ने किसी काम को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ। आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएँगे और मार खाएँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी ज़बान क्यों खराब होगी? अम्मा चिमटा देख, दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी - मेरा बच्चा, अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है, कितना

अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरन्त सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं तो क्या। मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता।



उसने दुकानदार से पूछा, “यह चिमटा कितने का है?”

“छह पैसे लगेंगे।”

हामिद का दिल बैठ गया। फिर भी बोला, “ठीक-ठीक बताओ।”

“ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना हो तो लो, नहीं तो चलते बनो।”

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा, “तीन पैसे लोगे?” और कहकर वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुननी पड़ें। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने

उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है। फिर शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया।

मोहसिन ने हँसकर कहा, “यह चिमटा क्यों लाया बुद्धू? इसका क्या करेगा?”

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटक कर कहा, “ज़रा अपना भिश्ती तो ज़मीन पर गिराओ। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।”

महमूद बोला, “तो यह चिमटा कोई खिलौना है?”

हामिद, “खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। बहादुर शेर है - मेरा चिमटा।”

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला, “मेरी खंजरी से बदलोगे? दो आने की है।”

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा। बोला, “मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो खतम हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफ़ान में बराबर डटा रहेगा।”

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए उसने अपने पैसे बचा रखे थे।

औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा ? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों।

मोहसिन ने कहा, “ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।”

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने थे !

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को अपना साथी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रभाव था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले लौट आए। मोहसिन की छोटी बहिन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधार गए।

मियाँ नूरे के वकील का अन्त इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो बैठ नहीं सकते। उनकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उन पर कागज़ का एक कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर बिराजे। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो ? बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने

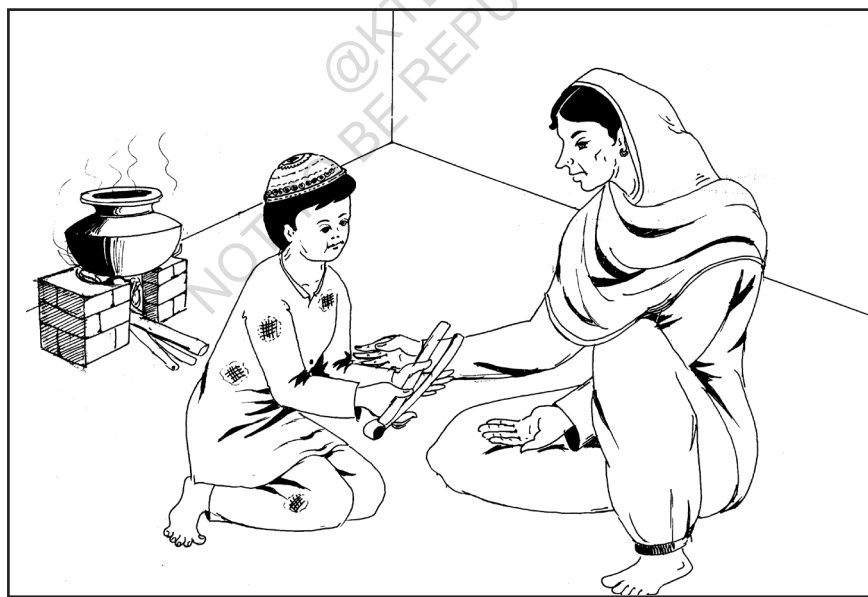
लगा। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर-ज़ोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थियाँ घूरे पर डाल दी गईं।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी। बोली, “यह चिमटा कहाँ से लाया?”

“मैंने मोल लिया है।”

“कै पैसे में?”

“तीन पैसे दिए।”



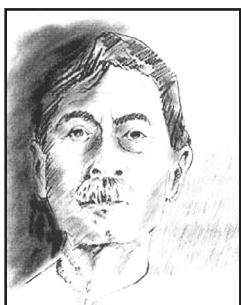
अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, न कुछ खाया, न पिया। लाया क्या, चिमटा ! “सारे मेले में तुझे

और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।”

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, “तुम्हारी अँगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने चिमटा लिया।”

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं।

कहानीकार का परिचय - प्रेमचन्द



प्रेमचन्द का जन्म एक में काशी से चार मील दूर लमही नामक गाँव में ३१ जुलाई १८८० को हुआ था। सात साल की अवस्था में उनकी माता का और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो गया। इससे उनके सिर पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। ट्यूशन कर-करके उन्होंने मैट्रिक पास किया। नौकरी करते हुए उन्होंने स्नातक परीक्षा पास की। प्रेमचन्द ने गांधीजी से प्रेरणा ग्रहण कर अपने साहित्य में भारतीय ग्रामीण जीवन का सुंदर चित्रण किया है। आपको ‘उपन्यास-सम्राट’ कहा जाता है। आपने सेवासदन, गबन, निर्मला, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यास लिखे हैं। आपकी सम्पूर्ण कहानियों को ‘मानसरोवर’ शीर्षक से आठ भागों में संकलित किया गया है।

शब्दार्थ :

रमज़ान - इसलामी वर्ष का नौवाँ महीना, रोज़ा - उपवास, रमज़ान के महीने भर मुसलमान सूर्योदय से सूर्यास्त तक न कुछ खाते, न एक बूँद पानी पीते हैं; कुबेर - धन के देवता, निगोड़ी - अभागिन, निकम्मी; कोस - तीन कि.मी.से अधिक दूरी का एक नाप, वज़ू - नमाज़ से पहले हाथ-पाँव धोना, सिजदा - नमाज़ अदा करते समय ज़मीन पर माथा टेकना, समस्त - सभी, कोष - खजाना, कवायद - कदम - चाल, जिरह - सच्चाई जाँचने के लिए वकील द्वारा प्रश्न पूछना, बिरादरी - जाति, समाज, भाई-चारा, पृथक - अलग, सबील - वह स्थान जहाँ लोगों को पानी, शर्बत आदि पिलाया जाए, रेवडियाँ - तिल से बनी मिठाई, सुरलोक - स्वर्ग लोक, मातम - शोक, विवेक - भले-बुरे को जाँचने की शक्ति, ज़ब्त - काबू, रोक, नियंत्रण; दामन - आँचल।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) रोज़े कब रखे जाते हैं ?
- २) हामिद के पाँव में क्या नहीं है ?
- ३) अमीना के बटुए में कितने पैसे थे ?
- ४) मोहसिन को क्या पसंद आया ?
- ५) सबील में क्या-क्या मिलता है ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

- १) रमज़ान में कितने रोज़े रखे जाते हैं ?
- २) धन के देवता कौन हैं ?
- ३) ईद के दिन लोग कहाँ जाते हैं ?

- ४) हामिद की दादी का नाम क्या था ?
- ५) हामिद कैसा लड़का था ?
- ६) हामिद की जेब में कितने पैसे थे ?
- ७) सिजदे के समय कैसा भाव प्रकट होता है ?
- ८) हामिद ने क्या खरीदा ?
- ९) हामिद ने चिमटा कितने पैसे में खरीदा था ?
- १०) अमीना गद्गद् होकर हामिद को क्या देने लगी ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :

- १) ईद के प्रभात का वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए।
- २) अमीना का दिल क्या सोचकर दुखी है ?
- ३) ईदगाह के दृश्य का वर्णन कीजिए।
- ४) हामिद के साथियों ने कौन-कौन से खिलौने खरीदे ?
- ५) हामिद ने क्या सोचकर चिमटा खरीदा ?
- ६) हामिद के गुणों के बारे में बताइए।

IV. निम्नलिखित वाक्य किसने, किससे कहा ?

- १) “मैं सबसे पहले आऊँगा।”
- २) “मेरी खंजरी से बदलोगे ? दो आने की है।”
- ३) “तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।”
- ४) “सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली।”

V. निम्नांकित शब्दों के हिंदी पर्यायवाची शब्द लिखिए :

- | | | | |
|------------|-----------|------------|----------|
| १) रोज़ | २) खुश | ३) इंतज़ार | ४) मज़ा |
| ५) बिरादरी | ६) रोज़ा | ७) इमारत | ८) कवायद |
| ९) खज़ाना | १०) ज़मीन | | |

VI. इन वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :

- १) इसलामी वर्ष का नौवाँ महीना -
- २) धन के देवता -
- ३) नमाज़ से पहले हाथ-पाँव धोना -
- ४) तीन कि.मी. से अधिक दूरी का एक नाप -
- ५) सच्चाई जाँचने के लिए वकील द्वारा प्रश्न पूछना -
- ६) भले-बुरे को जाँचने की शक्ति -
- ७) नमाज़ के समय ज़मीन पर माथा टेकना -

VII. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

उदाहरण : वह ने काम किया - उसने काम किया ।

- १) मेरे को तुम्हारी सलाह नहीं चाहिए ।
- २) मैं आज विद्यालय नहीं जाना है ।
- ३) मैंने तुम्हारे को समझा दिया ।
- ४) हमको घर जाना है ।

VIII. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | | | |
|-----------|------------|----------|-----------|
| १) घर | २) हिस्से | ३) चीज़ | |
| ४) खिलौना | ५) पंक्ति | ६) उंगली | |
| ७) दुआ | ८) रोटियाँ | ९) हाथ | १०) इमारत |

IX. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

- | | | | |
|------------|-----------|-----------|------------|
| १) निराशा | २) ज्यादा | ३) मज़बूत | |
| ४) प्रसन्न | ५) डर | ६) प्यार | |
| ७) खुश | ८) विवेक | ९) सुन्दर | १०) निश्चय |

X. अन्य लिंग रूप लिखिए :

- | | | | |
|----------|----------|----------|--------|
| १) लड़का | २) घोड़ा | ३) बूढ़ा | ४) बाप |
| ५) ऊँट | ६) हाथी | ७) दादी | |

XI. उदाहरण के अनुसार प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए :

सीखना	सिखाना	सिखवाना
पीना		
सीना		
सोना	सुलाना	सुलवाना
रोना		
धोना		

XII. उदाहरण के अनुसार बहुवचन बनाइए :

संधि - संधियाँ	तितली - तितलियाँ
जाति -	नदी -
ज्योति -	स्त्री -
ऋतु - ऋतुएँ	वधू - वधुएँ
धातु -	बहू -

भाषा - बोध

1. मुहावरे -

- | | | |
|-----|---------------------|------------------------------|
| (क) | कुबेर का खज़ाना | - अत्यधिक धन । |
| (ख) | दिल कचोटना | - दुःखी होना । |
| (ग) | पैरों में पर लगना | - तेज़ दौड़ना । |
| (घ) | आँख उठाकर देखना | - ध्यान देना । |
| (च) | हैज़े की भेंट होना | - हैज़े की बीमारी से मरना । |
| (छ) | दिल बैठ जाना | - उत्साह ठंडा पड़ जाना । |
| (ज) | बाल भी बाँका न करना | - थोड़ी भी हानि न पहुँचाना । |
| (झ) | रंग जमाना | - प्रभावित करना । |

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

- | | | |
|----|---------------------|---|
| १) | दिल कचोटना | - |
| २) | पैरों में पर लगना | - |
| ३) | मुँह ताकते रह जाना | - |
| ४) | दिल बैठ जाना | - |
| ५) | बाल भी बाँका न होना | - |

योग्यता - विस्तार

- * प्रेमचन्द इस कहानी के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं ? उसे समझिए और उस पर विचार कीजिए ।
- * 'मानसरोवर' भाग - १ से प्रेमचंद की अन्य कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए ।

यक्षगान



- संकलित

आशय : किसी स्थान विशेष में स्थानीय लोगों द्वारा विकसित कला लोककला कहलाती है। इस पाठ में कर्नाटक की लोककला, यक्षगान का परिचय दिया गया है। अपने प्रदेश की लोककलाओं का महत्व समझकर उन्हें बनाए रखना चाहिए।

रवि के पिता ने जब उसे बताया कि इस बार दशहरे की छुट्टियों में हम दादाजी से मिलने उनके गाँव जा रहे हैं तो रवि खुशी से झूम उठा क्योंकि जब भी वह मुम्बई की भीड़भाड़ से दूर अपने दादा के पास कर्नाटक के छोटे-से गाँव जाता था, उसे बहुत अच्छा लगता था। जिस दिन वे लोग गाँव पहुँचे, वहाँ दशहरे का उत्सव चल रहा था और इसी सन्दर्भ में वहाँ रोज़ कुछ-न-कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहते थे। रवि ने दादाजी से पूछा कि आज शाम का कार्यक्रम क्या है तो उन्होंने बताया कि आज यक्षगान का प्रदर्शन होनेवाला है। रवि के पिता ने बताया कि ‘तुम्हारे दादाजी भी यक्षगान के प्रसिद्ध कलाकार हैं।’ यह सुनकर रवि दादाजी के पीछे पड़ गया कि उसे यक्षगान के बारे में बताएँ। यह सुनते ही दादाजी मानों सपनों में खो गए।

दादाजी बोले - ‘कहाँ से शुरू करूँ, एक ज़माना था जब आज जैसी सुविधाएँ नहीं थीं, फिर भी हम कलाकारों में कला के प्रति जो निष्ठा और

समर्पण की भावना थी और लोगों में कला के प्रति जो प्रेम और रुचि थी, उसी का परिणाम है कि

यक्षगान कला आज भी जीवित है। रातभर यक्षगान चलता था और लोग अपनी नींद, भूख-प्यास, सब भुलाकर उसका आनंद उठाते थे। कलाकारों को तो और भी मेहनत करनी पड़ती थी क्योंकि उन्हें घण्टों पहले से ही तैयार होना पड़ता था। जानते हो, तुम मंच पर कलाकार को देखोगे तो पहचान भी नहीं पाओगे कि वह कौन है क्योंकि सभी कलाकार अपने चेहरे को



गहरे रंगों से सजा लेते हैं। पुराने ज़माने में तो पुरुष ही स्त्री का पात्र भी निभाते थे परन्तु कोई पहचान नहीं पाता था। रंग लगाने में ही उन्हें तीन-चार घण्टे लग जाते हैं। उनके वस्त्राभूषण भी बिल्कुल अलग होते हैं। सिर पर मुकुट, बाहों पर बृहत् बाजूबंद, वक्ष पर कवच, कमर में करघनी, पैरों में घुंघरू पहनते हैं। उनके कपड़े भी उन्हें सबसे विशिष्ट बनाते हैं, क्योंकि कपड़े पहनने से पहले वे अपने शरीर पर मोटे कपड़े की तह

(पैड) लगा लेते हैं जिसकी वजह से वे सामान्य लोगों से काफी मोटे दिखाई देते हैं। उनके कपड़े और आभूषण गहरे रंगों के और चमकीले होते हैं। उनमें रंगीन काँच, पत्थर, कागजों आदि का इस्तेमाल होता है, जिनसे प्रकाश-परावर्तन होता है, जिसकी वजह से चमक-दमक काफी बढ़ जाती है। सचमुच उसकी सुन्दरता बहुत आकर्षित करती है, कहते-कहते लगा मानो दादाजी उन दृश्यों को अपने सामने देख रहे हों। यह सुनकर रवि के मन में यक्षगान देखने की इच्छा और भी बढ़ गई।

रवि यक्षगान के बारे में और भी जानकारी पाना चाहता था जिससे वह मुम्बई जाकर अपने दोस्तों को भी उसके बारे में बता सके। उसने दादाजी से पूछा-दादाजी यक्षगान सिर्फ हमारे गाँव में होता है या कहीं और भी? सुनते ही दादाजी बोले - 'अरे नहीं बेटा, आजकल तो विदेशों में भी यक्षगान मंडलियाँ हैं और काफी लोकप्रिय और प्रसिद्ध हैं। कैनेडा, यू.एस.ए., कैलिफोर्निया आदि जगहों पर भी यक्षगान का प्रदर्शन किया जा रहा है। वैसे तो पूरे भारत के लोग इस कला से परिचित हैं परन्तु विशेष रूप से कर्नाटक में उडुपि, उत्तर-कन्नड, दक्षिण-कन्नड, शिमोगा आदि में, केरल के कासरगोड जिले में, आंध्रप्रदेश में और हमारी राजधानी बेंगलूर में यह काफी लोकप्रिय है। इतना ही क्यों कुछ दूसरी लोककलाएँ भी इससे मिलती-जुलती हैं, जैसे दक्षिण-कर्नाटक की 'मूडलपाया', उत्तर कर्नाटक की दोड्डाटा, चामराजनगर जिले का 'घट्टदकोरे' और आंध्रप्रदेश का 'केलिके'। यक्षगान के वैसे दो प्रसिद्ध प्रकार मानते हैं - 'बडगुतिट्टु' और 'तेंकुतिट्टु'।



रवि ने दादाजी को बीच में रोकते हुए पूछा - 'दादाजी पहले मुझे यह तो बताइए कि कलाकार मंच पर करते क्या हैं ? उनका प्रदर्शन कैसा होता है?' दादाजी बोले - 'बताता हूँ बेटा। यक्षगान प्रसंग में ज्यादातर हिन्दू पौराणिक कथाओं के प्रसंगों को लिया जाता है और उन्हें यक्षगान के संगीत के राग-ताल में संजोकर प्रस्तुत किया जाता है। यक्षगान का संगीत काफी प्राचीन माना जाता है। पार्श्वसंगीत की व्यवस्था होती है। सूत्रधार गाकर या संवाद रूप में बोलकर, कथा और पात्रों का परिचय देता है। तेज वाद्य चंडे बजता है, हारमोनियम पर धुन बजाई जाती है, कलाकार भी पंचधातु से बनी छोटी घंटियाँ या 'ताला' हाथ में लेकर बजाते हैं। हम सब अपनी अंगुलियों की नाप की घंटियाँ बनाकर अपने पास रखते

थे। इस प्रकार संगीत, नृत्य और रोचक कथाओं से जो माहौल बनता है, उससे देखनेवाला अपने आपको पूरी तरह भूल जाता है और रात कब बीत जाती है पता भी नहीं चलता। कलाकार भावों का प्रदर्शन ऐसे करते हैं कि दर्शक भी उत्तेजित होकर भावुक हो जाते हैं।’



रवि ने पूछा - ‘दादाजी क्या अब भी आप अभिनय करते हैं?’ दादाजी बोले-‘नहीं बेटा, अब मुझमें इतनी ताकत कहाँ? और हाँ यक्षगान समय के साथ थोड़ा बदला भी है। उसमें अब पौराणिक कथाओं के साथ नई कथाओं का भी समावेश हुआ है। वस्त्राभूषण में भी थोड़े परिवर्तन हुए हैं। पर इन आधुनिकताओं के साथ यक्षगान ने हमारी संस्कृति को बचाकर भी रखा है। आशा है भविष्य में भी यह कला हमारी संस्कृति की धरोहर को संभालकर रखेगी।’

शब्दार्थ :

निष्ठा - आस्था, भक्ति; समर्पण - त्याग, बृहत् - बड़ा, बाजुबंद - बाँह पर पहना जाने वाला आभूषण, प्रकाश-परावर्तन - प्रकाश किरणों का किसी सतह से टकराकर लौटना, पौराणिक - पुराण से सम्बंधित, पार्श्वसंगीत-पीछे से बजाया जाने वाला संगीत, सूत्रधार-नाटक की व्यवस्था करने तथा कथा और पात्रों का परिचय देनेवाला, पंचधातु - पाँच धातुओं को मिलाकर बनाई गई धातु, समावेश करना - मिलाना, धरोहर-संपत्ति।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) रवि छुट्टियों में कहाँ जाने वाला था ?
- २) रवि कहाँ रहता था ?
- ३) गाँव में किसका उत्सव चल रहा था ?
- ४) किस कला का प्रदर्शन होनेवाला था ?
- ५) यक्षगान का प्रदर्शन किस समय किया जाता है ?
- ६) मंच पर जाते समय कलाकार चेहरे पर क्या लगाते हैं ?
- ७) कलाकारों के वस्त्राभूषण कैसे होते हैं ?
- ८) यक्षगान के दो प्रमुख प्रकार कौन-से हैं ?
- ९) यक्षगान की कथा कहाँ से ली जाती है ?
- १०) यक्षगान कला क्या संभाल कर रखेगी ?

II. लिखित -

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

- १) दादाजी के गाँव में क्या चल रहा था ?
- २) कलाकारों के मन में यक्षगान के प्रति कैसी भावना थी ?
- ३) लोग यक्षगान का आनंद कैसे उठाते थे ?
- ४) कलाकारों के वस्त्राभूषणों की चमक कैसे बढ़ जाती थी ?
- ५) यक्षगान के दो प्रमुख प्रकार कौन-से हैं ?
- ६) सूत्रधार क्या करता है ?
- ७) दर्शक क्यों भावुक हो जाते हैं ?
- ८) आधुनिक काल में यक्षगान में क्या परिवर्तन हुए हैं ?

आ) चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) यक्षगान कला के आज भी जीवित होने का कारण क्या है ?
- २) यक्षगान कलाकारों के वस्त्राभूषणों का परिचय दीजिए।
- ३) यक्षगान कला कहाँ-कहाँ प्रचलित है ?
- ४) यक्षगान के संगीत और वाद्ययंत्रों का परिचय दीजिए।

इ) निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

- | | | | |
|------------|-------------|------------|-------------|
| १) निष्ठा | २) प्रदर्शन | ३) विशिष्ट | ४) लोकप्रिय |
| ५) पौराणिक | ६) संस्कृति | ७) धरोहर | |

III. भाषा-बोध

1) ध्यान दीजिए : सांस्कृतिक = संस्कृति + इक

संस्कृति शब्द में 'इक' प्रत्यय जोड़कर 'सांस्कृतिक' - विशेषण शब्द का निर्माण किया गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए :

- १) इतिहास २) नीति ३) वेद ४) समाज ५) भूगोल

2) उदाहरण के अनुसार शब्द निर्माण कीजिए :

उदाहरण - देश - स्वदेश, देशभक्ति

- १) दर्शन २) दिन ३) शास्त्र ४) रंग

3) उचित सर्वनाम चुनकर रिक्त स्थान भरिए :

(उससे, तुम, मेरे, हम, कुछ)

मैं शीला से बात कर रही थी। मैंने कहा भी साथ बाज़ार चलो। दोनों मिलकर साड़ियाँ खरीदेंगे। भी अपनी माँ के लिए कुछ साड़ियाँ खरीद लेना।

4) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

- १) दशहरे का उत्सव चल रही थी।
- २) पुरुष ही स्त्री का पात्र निभाती थी।
- ३) संगीत की प्रस्तुति होता है।
- ४) माँ अच्छा खाना पकाते हैं।
- ५) लड़के मैदान का चक्कर लगा रही थीं।

5) सही जोड़े बनाइए :

- | | | | |
|----|--------------|---|-----------|
| १) | सांस्कृतिक | - | केलिके |
| २) | पौराणिक | - | लोककला |
| ३) | यक्षगान | - | कार्यक्रम |
| ४) | चामराजनगर | - | कथा |
| ५) | आन्ध्रप्रदेश | - | घट्टदकोरे |

6) यह भी जानिए :

भाव या अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्नलिखित प्रकार होते हैं -

- | | | | |
|----|-------------|---|--------------------------------------|
| १) | विधानार्थक | - | रमेश घर जाता है। |
| २) | निषेधार्थक | - | वह गाना नहीं गाता। |
| ३) | प्रश्नार्थक | - | तुम कहाँ जा रहे हो ? |
| ४) | आज्ञार्थक | - | रमा तुम बैठ जाओ। |
| ५) | इच्छासूचक | - | भगवान तुम्हारा भला करे। |
| ६) | संदेहार्थक | - | शायद वह सो गया होगा। |
| ७) | विस्मयार्थक | - | अरे ! तुम आ गए। |
| ८) | संकेतवाचक | - | यदि बारिश होती तो मौसम ठंडा हो जाता। |

योग्यता - विस्तार :

- * यक्षगान के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए। इससे सम्बंधित चित्रों का संकलन करके अपने विद्यालय के सूचना पट्ट पर लगाइए।
- * भारत की अन्य लोककलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

पूरक वाचन

दिशा ज्ञान

- महीप प्रशांत

जैसे-जैसे आठवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा के दिन निकट आते जा रहे थे, आलोक की घबराहट बढ़ती जा रही थी। ऐसा नहीं कि वह नालायक था और पूरे साल पढ़ा नहीं था। ले-देकर द्वितीय श्रेणी में तो पास हो ही जाता था। मतलब यह कि वह एक सामान्य विद्यार्थी था, जो न तो पढ़ाई में बहुत लीन रहता था और न ही पढ़ाई की उपेक्षा करता था। मगर यह उसकी बहुत बड़ी कमज़ोरी थी कि परीक्षा के नाम से ही उसके हाथ-पांव फूल जाते थे।

इस बार भी यही हुआ। जैसे ही उसे पता लगा कि परीक्षा में सिर्फ दस दिन रह गए हैं, उसकी भूख-प्यास गुम हो गई। घबराहट के मारे उसकी तैयारी भी ठीक से नहीं हो पा रही थी। एक अध्याय पढ़ कर वह अगला अध्याय पढ़ना शुरू करता तो उसे लगता कि वह पिछला अध्याय भूल गया है।

“इस बार तो मैं ज़रूर फेल हो जाऊंगा” उसने मन में सोचा। तभी बाहर स्कूटर रुकने की आवाज़ सुनाई दी। यह समझ गया कि पिताजी ऑफिस से लौट आए हैं।

“कैसी तैयारी चल रही है, आलोक?” पिताजी ने उसके कमरे में आकर पूछा।

आलोक रुआँसा सा हो गया, “क्या बताऊँ डैडी, इस बार तो मेरी तैयारी बिल्कुल भी नहीं हो पा रही है। बार-बार लगता है कि पिछला याद किया सब कुछ भूल गया हूँ और उसे फिर दोहराना पड़ता है। इस चक्कर में मेरा कोर्स बहुत कम हो पाया है और अब सात ही दिन रह गए हैं। इस बार तो मैं ज़रूर ही फेल हो जाऊँगा।” और वह लगभग रोने को हो गया।

पिताजी ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा, “नहीं बेटे, तुम नाहक घबराते हो। अच्छा मैं देखूँ तुम्हें कितना याद है।” कहकर उन्होंने उसकी इतिहास की किताब उठाई और उससे चार-पाँच प्रश्न पूछे। रुक-रुक कर ही सही पर उसने सबके सही जवाब दे दिए।

“वाह! तुम्हें तो सब याद है। फिर तुम यह क्यों समझते हो कि तुम्हें कुछ याद नहीं? असल में तुम परीक्षाओं से बहुत घबराए हुए हो। देखो, घबराने से तो काम बननेवाला नहीं। यह बात ध्यान में रखो कि अगर तुम घबराओगे नहीं, तभी संतुलित मन से पढ़ सकोगे।” और पिताजी कमरे से बाहर निकल गए।

“डैडी ठीक कहते हैं।” आलोक ने सोचा, “अब मैं बिना घबराए पढ़ूँगा।” किन्तु थोड़ी ही देर में परीक्षा की याद आते ही उसकी घबराहट फिर बढ़ गई।

पिताजी भी जानते थे कि केवल उपदेश दे देने से आलोक की घबराहट दूर होनेवाली नहीं। वह गम्भीरता से सोचने लगे कि आलोक की घबराहट दूर कैसे की जाए।

तब तक शाम की चाय का समय हो गया था, इसलिए उन्होंने आलोक को भी बुला लिया। चाय पीते-पीते पिताजी ने आलोक से कहा, “अच्छा आलोक, मैं तुम्हें बहुत पहले का एक सच्चा किस्सा सुनाता हूँ:

एक लड़का था। तब वह तुमसे थोड़ा सा ही बड़ा रहा होगा यानि कि कोई चौदह साल का, तो एक दुर्घटना में उसके पिताजी गुज़र गए। घर में बीमार माँ थी और दो छोटे भाई थे। उनकी कठिनाई देखकर रिश्तेदारों ने भी मुँह मोड़ लिया। पूरे घर को सम्भालने की जिम्मेदारी उस छोटे से बच्चे पर आ गई। पर उस लड़के ने हिम्मत न हारी। वह उस समय नौवीं कक्षा में पढ़ रहा था, किन्तु उसने पढ़ाई छोड़ दी। पिताजी के कोई एक-डेढ़ हज़ार रुपये बचे थे। उस समय इतने रुपये बहुत होते थे। उन रुपयों से उस हिम्मती लड़के ने किताबों की छोटी सी दुकान खोली। उफ़.... मैं तुम्हें बता नहीं सकता क्या-क्या दुःख झेले उस लड़के ने। अखबार बाँटना, दुकान चलाना, घर चलाना, माँ का इलाज कराना, छोटे भाईयों को पढ़ाना आदि न जाने कितने काम बेचारे को उस छोटी सी उम्र में करने पड़े। किन्तु उस लड़के ने हिम्मत न हारी। शुरू-शुरू में उसे दुकान चलाने में घाटा हुआ - अनुभव जो नहीं था, किन्तु धीरे-धीरे अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी के बल पर उसने दुकान अच्छी तरह जमा ली। खुद ज़िन्दगी भर नहीं पढ़ पाया किन्तु, छोटे भाईयों को पढ़ा-लिखा कर लायक बनाया।” भावावेश में पिताजी बोलते चले गए। फिर थोड़ा रुक कर गहरी साँस लेकर बोले, “और जानते हो वह लड़का कौन था?”

आलोक चुप। पिताजी ने ही उत्तर दिया, “वे तुम्हारे सबसे बड़े ताऊजी जो तुम्हारे आने से पहले गुज़र गए।” पिताजी थोड़ा रुके, “अच्छा आलोक, एक बात बताओ। अगर तुम बड़े भाई साहब की जगह होते तो अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहते या वही करते जो दादाजी ने किया था।”

“अवश्य वही करता जो बड़े ताऊजी ने किया था।”

पिताजी का चेहरा कठोर हो गया। “नहीं। तुम वैसा कभी नहीं करते,” थोड़ा गुस्से से पिताजी बोले, “तुम जानते हो उस समय बड़े भाई साहब के लिए कितनी बड़ी परीक्षा की घड़ी थी। और तुम जो इन साधारण सी परीक्षाओं से घबराते हो, उस परीक्षा का सामना कैसे कर पाते?”

आलोक सन्न रह गया। पिताजी थोड़ा नरम पड़े, “देखो आलोक परीक्षा सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं होती बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में होती है। परीक्षा से तुम कभी बच नहीं सकते। हर परीक्षा में इन्सान की परख होती है। परीक्षा का हिम्मत से सामना करनेवाले ही परीक्षा में खरे उतर पाते हैं, परीक्षा से घबरानेवाले नहीं।”

आलोक थोड़ी देर चुप रहा। शायद पिताजी की बातों का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा था। फिर थोड़ा सा मुस्कुराकर बोला, “और डैडी, हिम्मत के साथ तैयारी भी तो होनी चाहिए।”

पिताजी भी हँस पड़े, “हाँ वो तो ठीक है। यह बताओ, तुम मेरी बात समझ गए?”

“बिल्कुल समझ गया, डैडी।” खड़े होते हुए मुस्कुराकर आलोक बोला , “विश्वास रखिए अब मैं बिना घबराहट के पढ़ाई करूँगा।” आत्मविश्वासपूर्ण शब्दों में उसने कहा।

और स्वयं उसके आश्चर्य के लिए उस बार वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

इन प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

- १) आलोक क्यों घबराया हुआ था?
- २) घबराहट के मारे आलोक की तैयारी कैसे चल रही थी?
- ३) आलोक के पिताजी ने कौन-सी कहानी सुनाई?
- ४) कहानी कहने के बाद पिताजी ने आलोक से क्या पूछा?
- ५) इस कहानी का संदेश क्या है?
- ६) आलोक ने आत्मविश्वास के साथ क्या कहा?

वीर



- रामधारी सिंह 'दिनकर'

आशय: जो वीर होते हैं, वे किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होते हैं। हमें कभी भी धीरज न खोकर विपत्तियों का सामना करना चाहिए।

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं
उद्योग-निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।



है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़,

मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेहंदी में जैसे लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,

बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

कवि परिचय - रामधारी सिंह 'दिनकर'



रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म सन् १९०८ में मुंगेर जिले में स्थित सिमरिया गाँव में हुआ। वे अध्यापक, रजिस्ट्रार, कुलपति, संसद सदस्य आदि पदों पर विराजमान रहे। इनकी कृतियों में देशभक्ति, मानवता, वीरता आदि भावनाएँ कूट-कूटकर भरी हुई हैं।

इनकी रचनाएँ हैं - कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रेणुका, हुँकार, नीम के पत्ते, रसवंती, सूरज का ब्याह, सीपी और शंख, नीलकुसुम आदि। “उर्वशी” के लिए उनको ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है।

शब्दार्थ :

विपत्ति - संकट, मुसीबत ; कायर - डरपोक, दहलाना - डराना, सूरमा - बहादुर, विचलित - निश्चय से हटना, उफ़ - थकावट को प्रकट करने का संकेत, गहते - पकड़ते, चरण- कदम, नित - रोज़, शूल - काँटा, नसाते - नष्ट करते, छाना - फैलना, मग - रास्ता, खम ठोंकना - ललकारना, ठेलना - ढकेलकर आगे बढ़ना, प्रखर - तेज, वर्तिका - बत्ती।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) विपत्ति आने पर कायर क्या करते हैं ?
- २) सूरमा क्या नहीं खोते ?
- ३) वीर राह कहाँ बनाते हैं ?
- ४) पत्थर क्या बन जाता है ?
- ५) रोशनी कौन पाता है ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

- १) विपत्ति में कायर और सूरमा क्या करते हैं ?
- २) वीर किसे गले लगाते हैं ?

- ३) मानव के ज़ोर लगाने पर क्या होता है ?
- ४) बत्ती में क्या छिपा होता है ?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) बहादुर किस तरह आगे बढ़ते हैं ?
- २) वीर आदमी अपने मार्ग में क्या करते हैं ?
- ३) मानव में गुण किस तरह छिपे होते हैं ?

IV. निम्नलिखित कवितांश की पूर्ति कीजिए :

मुँह से

.....

.....

..... रहते हैं।

V. कवितांश का भावार्थ लिखिए :

है कौन विघ्न ऐसा जग में,

टिक सके आदमी के मग में ?

खम ठोंक ठेलता है जब नर,

पर्वत के जाते पाँव उखड़,

मानव जब ज़ोर लगाता है,

पत्थर पानी बन जाता है।

योग्यता - विस्तार :

- * दिनकर जी की कोई दूसरी कविता कंठस्थ कीजिए।
- * वीरता से संबंधित अन्य कविताएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

बैलगाड़ी

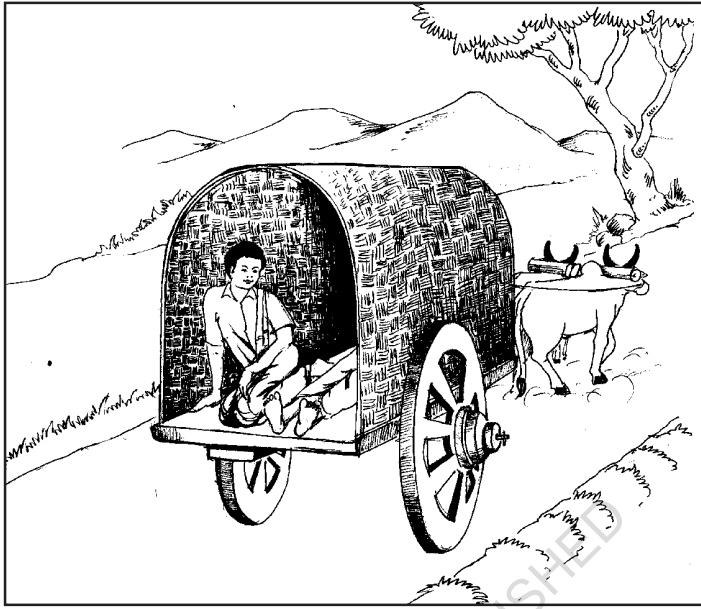


- बेढब बनारसी

आशय : 'बैलगाड़ी' एक सुन्दर रेखाचित्र है। आज मानव तीव्र से तीव्रतर वाहन की खोज में लगा हुआ है, किन्तु इन तीव्रगामी वाहनों में वह आनन्द नहीं, जो बैलगाड़ी में है। बैलगाड़ी आज परम्परा और निर्धनता का प्रतीक बन गई है।

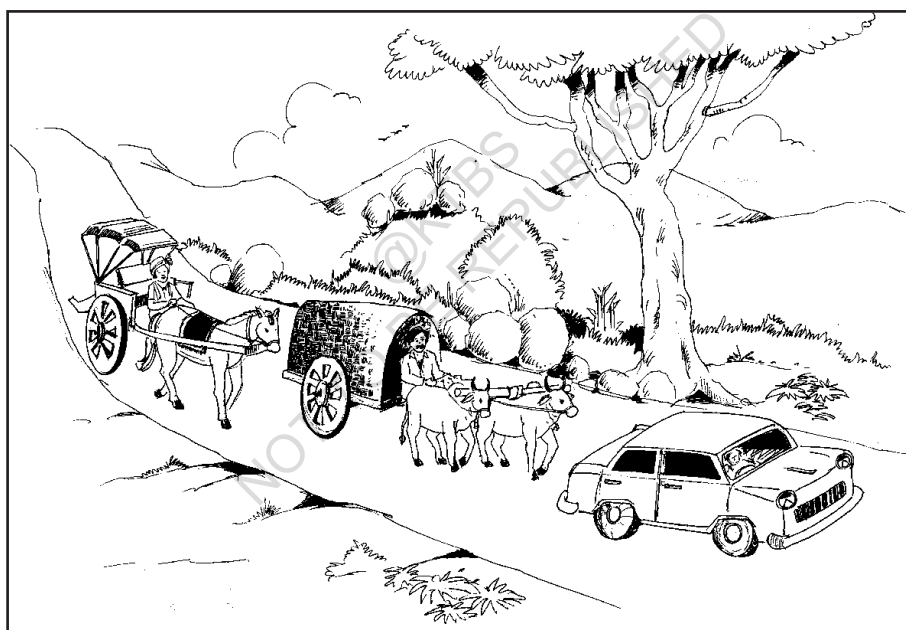
मैं तो बारात बहुत ही कम करता हूँ। इसलिए नहीं कि भोजन का कष्ट होता किन्तु इसलिए भी कि अपने विवाह की स्मृति जाग्रत हो जाती है और फिर एक बार यौवन के सपने का आभास होने लगता है और फिर जी चाहता है कि शीर्षासन करके, और कायाकल्प करके युवक बन जाऊँ। किन्तु इस बार तो बेतरह फँसा, छुट्टी भी थी, बीमार भी नहीं था, गाड़ी के समय से पहले एक आदमी मेरे घर पहुँच गया। मानो मैं कहीं भाग जानेवाला हूँ, पहरा पड़ रहा है।

स्टेशन पहुँचा। सबके सामान के साथ मेरा भी सामान रख दिया गया। एक तीसरे दर्जे का बड़ा डिब्बा लोगों ने रिज़र्व करा रखा था। हम लोग चालीस आदमी के लगभग थे। बड़े आराम से सब लोग बैठ गये। गाड़ी चली, गार्ड साहब को पाँच रुपये का नोट किसी ने दिया। उन्होंने मुस्कराकर पूछा, “कोई कष्ट तो नहीं है” और चले गये।



दो बजे दिन को गाड़ी स्टेशन पहुँची। वहाँ उतरकर लोगों ने जल-पान किया। वहाँ से आठ मील जाना था जहाँ विवाह होनेवाला था और जाने के लिए केवल तीन प्रकार की सवारियाँ थीं ; हाथी, घोड़ा और बैलगाड़ी। इस गाँव में पूर्ण स्वराज्य था, इसलिए मोटर कार और बस का तो कहना ही क्या, एक्का भी नहीं मिलता था। स्टेशन के निकट एक एक्कावाला था किन्तु उसकी घोड़ी का बच्चा होनेवाला था इसलिए उसका एक्का भी बेकार था। मुझसे पूछा गया, आप कैसे चलेंगे। आठ मील कोई अधिक नहीं था, मैं पैदल भी जा सकता था किन्तु मैंने बैलगाड़ी ही पसन्द की। हाथी पर सवार होने का फल मैं एक बार पा चुका था। घोड़ा वीरों की सवारी अवश्य है किन्तु साहित्यकारों की नहीं। पहले युग की बात नहीं जानता किन्तु मैंने प्रसाद जी को, निराला जी को, मैथिलीशरण गुप्त जी को कभी घोड़े पर सवार नहीं देखा।

मेरी सुविधा के लिए गाड़ी में गद्दा और चद्दर बिछा दिये गये जिसमें मैं लेट सकूँ। और सचमुच मैं लेट गया। एक और सज्जन मेरे साथ थे। वे आजमगढ़ में मुख्तारी करते थे। गाड़ीवान ने बैल जोते और गाड़ी चली। आकाश में बदली थी। सावन का महीना था। हवा मन्द-मन्द चल रही थी। गाड़ी अधिक मन्द थी कि हवा, कह नहीं सकता। गाड़ी के बैल से गाड़ीवान बात करता जाता था। ऐसा जान पड़ता था कि बैल भी गाड़ीवान की बातों को समझते हैं।



वैदिक काल में लोग गाड़ी पर चलते थे कि नहीं, कह नहीं सकता किन्तु मुझे ऐसा जान पड़ा कि आज लोग अभी-अभी पंजाब से युक्तप्रान्त की ओर बढ़े हैं और मैं भी उन्हीं में से एक हूँ। बैलगाड़ी पर चल रहा हूँ। किसी ऐसे स्थान की खोज में जहाँ रहकर झोंपड़ी बना सकूँ। दोनों ओर

धान के खेत लहलहा रहे थे और उनके चारों ओर समुद्र के समान जल फैला हुआ था। सड़क पर लम्बी-लम्बी गहरी लीक फैली हुई थी मानो जरा-जर्जरित किसी वृद्ध का मस्तक है। धूल से जब पहिया ढक जाता था तब कहीं कीचड़ से पूर्ण सड़क मिल जाती थी और पहिये पर दो-दो इंच मिट्टी का लेप हो जाता था। आगे जहाँ सड़क सूखी होती वहाँ मिट्टी फैल जाती। इस प्रकार गाड़ी मुझीको नहीं ले जा रही थी मिट्टी भी ढो रही थी। तेज़ चलनेवाली सवारियों में बड़ा भारी दुर्गुण है कि उनमें कुछ ग्रहण करने की क्षमता नहीं होती। मन-गति का यह गुण है। विचारों के विस्तार के लिए तो बैलगाड़ी की सवारी बहुत ही उपयुक्त है। विचारों की श्रृंखला टूटने नहीं पाती। सोचते जाइए। यह डर तो नहीं है कि अभी स्टेशन आ जाएगा। फिर पान, बीड़ी, सिगरेट की चिल्लाहट से आपका सपना भंग नहीं हो सकता। आप धीरे-धीरे सोचते चलिए, ऊपर अनन्त आकाश है जो आपके विचारों को भी अनन्त बना देगा। मैंने जो जैसा ऊपर कहा है वैदिक युग में अपने को पाया। और आनन्द! रेल के डिब्बे में लोगों की खाँसी के कीटाणु, धुएँ चाहे वह सौंफी बीड़ी के हों या ५५५ सिगरेट के हों या हवाना सिगार के हों, चारों ओर फैलते हैं। उनसे कुछ काल के लिए रक्षा हो गई और पवन की उदारता का कुछ आभास होने लगा। धूल भी उड़ती थी। किंतु वह धूल सूर्य की किरणों से 'पास्चुराइज़्ड' की हुई थी। उसमें किसी बीमारी के कीटाणु होने की आशंका नहीं थी। घोड़े और हाथी निकल गये। मेरी बैलगाड़ी और बैलगाड़ियों से भी सुस्त थी। गाड़ीवान ने दस-पंद्रह बार सुरती फाँकी, इससे उसकी सुषुम्ना नाड़ी में कुछ शान्ति का प्रसार होने लगा और वह उस गाँव की कच्ची सड़क

छोड़कर सपने के संसार में विचरने लगा। बैल आज्ञाकारी थे। वे एक मति से एक गति से सड़क के बीच परिवार के बोझ के समान गाड़ी खींचते चले जा रहे थे। हम लोग आधी दूर आए थे। आकाश मेघाच्छन्न हो गया और जब गाड़ीवान की मुँड़ी हुई खोपड़ी पर टप से दो-तीन बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ीं तब वह सचेत हुआ। मैं घबराया। छाता मेरे पास था नहीं, न मेरे साथी के पास। ऐसा जान पड़ा कि इन्द्र भगवान मुझे स्नान कराने पर तुले हैं। मैं उठ बैठा। दूर एक आम की बाड़ी थी। गाड़ीवान से कहा, वहीं से चलो, कुछ तो रक्षा हो ही जाएगी। मैं ही हूँ कि आजकल सन्ध्या-सवेरे पानी की कल के नीचे से उठने का मन नहीं करता और इस समय पानी से घबरा रहा हूँ। विधि का भी विचित्र विधान है। किन्तु गाड़ीवान के चेहरे पर घबराहट की एक भी रेखा दिखाई नहीं दी। वह तो महात्माजी का प्रतीक जान पड़ा। जैसे वह भारत की गाड़ी घबराहट के बिना धीरे-धीरे खींचते चले जा रहे थे; उसी भाँति यह भी। उन्हें भी सब बातों में एक गुण दिखाई देता। गाड़ीवान बोला, “घबराइए नहीं बाबू साहब! यह पानी क्या है, बड़ा-बड़ा पत्थर भी कुछ नहीं कर सकता।” और उसने झटके से गाड़ी के नीचे से सिरकी की दो छतें निकालकर गाड़ी के ऊपर बाँध दी। यह पीला छप्पर ऐसा जान पड़ा कि सुवर्ण का छत्र किसीने मेरे ऊपर लगा दिया है। पानी ज़ोरों से आया। सचमुच अन्दर पानी नहीं आ रहा था। कभी-कभी एकाएक नन्ही बूँद आ जाती थी केवल स्मरण कराने के लिए कि मेघ महाराज का शासनकाल समाप्त नहीं हो गया है। नहीं तो ऊपर पानी गिरता था और फिसल जाता था। हमारे साथी महोदय तो सो गये। ऐसा जान पड़ा कि इन्होंने अफीम का इन्जेक्शन लिया है। बैलों का

शरीर तर हो रहा था। वे बेचारे संतोष और शान्ति की प्रतिमा बने धीरे-धीरे चले जा रहे थे। कभी-कभी गर्दन हिला देते थे और जल के कुछ कण इधर-उधर गिर पड़ते थे। जैसे बड़े-बड़े कंजूस भी स्वर्ग में अपना



स्थान सुरक्षित कराने के लिए कभी-कभी कुछ दान दे दिया करते हैं। रेल तेज़ होती है इसलिए बीच-बीच में रुकना पड़ता है। बैलगाड़ी की गति ऐसी होती है कि रुकने की आवश्यकता नहीं। सोच रहा था कि गति से चलना और बीच में रुकना ठीक है या धीरे-धीरे एक रंग से चलना ठीक है। क्या निर्णय करता, किस बात का निर्णय संसार में आज तक हुआ है। यह भी तो लोग निश्चय रूप से कह नहीं सके कि ईश्वर है कि नहीं।

अगर कहीं बैलगाड़ी लन्दन की सड़कों पर चले तो क्या होगा। जहाँ एक से एक गतिवान् सवारियाँ चलती हैं। यह भारत ही है कि मोटर की बगल में बैलगाड़ी भी चलती है ठीक वैसे बिड़लों और सिंहानियों की नाक के नीचे अस्थि-पंजर वाले मानव भी साँस लेते चले जा रहे हैं। यही एक देश है जहाँ बीसवीं शती में भी दसवीं शती दिखाई देती है।

लेखक परिचय - बेढब बनारसी

श्री बेढब बनारसी का जन्म एक सुसंस्कृत परिवार में हुआ था। आपका अधिकांश जीवन बनारस में ही बीता। आपने कविता, कहानी, नाटक, रेखाचित्र आदि विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। 'बेढब की बहक', 'काव्य-कमल', 'बनारसी-एक्का', 'गाँधी का भूत और टनाटन', 'अभिनेता' आदि आपके ग्रंथ हैं। आपकी सभी रचनाएँ हास्यप्रधान हैं और उनमें समसामयिक विड़म्बनाओं की तीखी टिप्पणी मिलती है।

शब्दार्थ :

कायाकल्प - शरीर सम्बन्धी चिकित्सा, रिज़र्व - आरक्षित, मुख्तारी - प्रतिनिधित्व (कानूनी सलाहकार), युक्तप्रान्त - दो राज्यों का जोड़, लीक - किसी बात पर अटल होना, लकीर, (मर्यादा बंधाना); श्रृंखला - साँकल, आभास - झलक, (कांति); सुरती - तम्बाकू (खैनी), मेघाच्छन्न - बादलों से छाया हुआ, बाड़ी - बगीचा, विधि - भाग्य (विधान), सिरकी - सरकंडा (बाँस की पतली नली), तर होना - भीगना (आर्द्र, नम), अस्थि-पंजर - कंकाल, शती - सौ वर्ष।

I. मौखिक -

- १) गाड़ी स्टेशन कब पहुँची ?
- २) एक्का बेकार क्यों था ?
- ३) आजमगढ़ में सज्जन क्या करते थे ?
- ४) गाड़ीवान क्या बोला ?

II. लिखित -

अ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- १) लोगों ने कौन-सा डिब्बा रिज़र्व करवाया था ?
- २) सवारियाँ कितनी प्रकार की और कौन-सी थीं ?
- ३) लेखक ने किन-किन को घोड़े पर सवार नहीं देखा ?
- ४) घोड़ा किनकी सवारी है और किनकी नहीं ?
- ५) तेज़ चलनेवाली सवारियों में कौन-सा दुर्गुण है ?
- ६) लेखक ने रेल के डिब्बे का वर्णन कैसे किया है ?
- ७) कंजूस स्वर्ग में अपना स्थान सुरक्षित कराने के लिए क्या करते हैं ?
- ८) बीसवीं शती में भी दसवीं शती कहाँ दिखाई देती है ?

आ) रिक्त स्थानों में योग्य शब्दों की पूर्ति कीजिए :

- १) घोड़ा की सवारी अवश्य है, किन्तु की नहीं।
- २) ऐसा जान पड़ता था कि बैल भी की बातों को समझते हैं।
- ३) गाड़ीवान ने दस-पन्द्रह बार फाँकी।
- ४) विधि का भी विधान है।

III. भाषा बोध

- 1) पाठ में आए पुनरुक्तिवाले चार शब्दों से वाक्य बनाइए :
जैसे - धीरे - धीरे
बैलगाड़ी धीरे-धीरे चल रही थी।
- 2) 'र' की मात्राओं का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द लिखिए :
जैसे - (ँ) धर्म, (ू) राष्ट्र (/) द्रव्य
(१)
(२)
(३)
- 3) इन शब्दों की वर्तनी शुद्ध रूप में लिखिए :
१) यूख्त प्रांथ २) मेगाचछन ३) सांती
४) अस्ति-पंझर ५) दुघुर्ण

- 57

इन वाक्यों में आए रेखांकित पद अकर्मक क्रियाएँ हैं। यहाँ क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर पड़ रहा है। इसलिए यहाँ अकर्मक क्रिया है।

चल, उठ, रो, नाच, दौड़ आदि अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

योग्यता - विस्तार :

- * बैलगाड़ी एवम् घोड़ागाड़ी की तुलना कीजिए।
- * आधुनिक वाहनों के चित्र इकट्ठा कर एक चार्ट बनाइए।
- * 'बेढ़ब बनारसी' जी की अन्य रचनाएँ पढ़िए।

ऐसे - ऐसे



- विष्णु प्रभाकर

आशय : आजकल के छात्र छुट्टी में मौज-मस्ती करते हुए समय व्यतीत करना चाहते हैं। बहाना बनाते हुए समय पर गृहकार्य नहीं करते। प्रस्तुत एकांकी में इसका वर्णन किया गया है। यह एकांकी समय का सदुपयोग करते हुए काम करने की प्रेरणा देता है।

पात्र - परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़कवाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फ़ोन रखा है। परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ-नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में

पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार-बार पेट को पकड़ता है। उसके माता-पिता पास बैठे हैं।)

माँ : (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले, तब तक सेंक ले। (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है। फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है।) इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ़ एक केला और एक संतरा खाया था। अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर यकायक बोला-पिताजी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा। मैंने कहा - अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला - नहीं। फिर पूछा - चाकू-सा चुभता है? तो जवाब दिया - नहीं। गोला - सा फूटता है? तो बोला - नहीं। जो पूछा उसका जवाब - नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है।

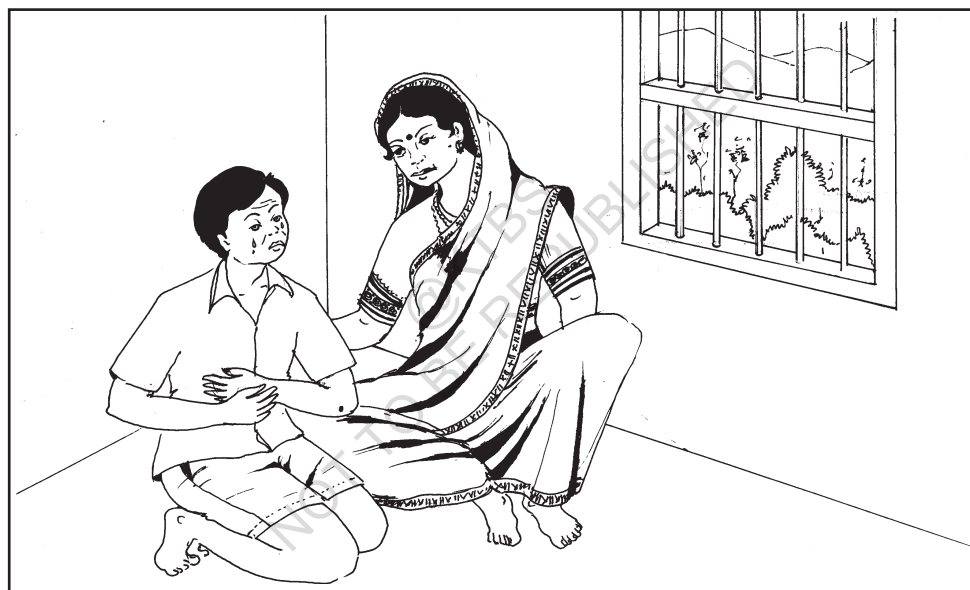
माँ : (हँसकर) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है? कोई नयी बीमारी तो नहीं? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है! हवाइयाँ उड़ रही हैं।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था। खड़ा नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा - मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है।

मोहन : (ज़ोर से कराहकर) माँ! ओ माँ!

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ जान पड़ती है। यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देखो न, कैसे लोट रहा है! ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट - सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते!

(तभी फ़ोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं।)



पिता : यह ४३३३२ है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ... कौन? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है.... जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं... बस यही कह रहा है... बस जी... नहीं, गिरा भी नहीं.... 'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे!' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता। जी... जी हाँ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है। नाचा...

नाचता फिरता है... जी नहीं, दस्त तो नहीं आया... जी हाँ, पेशाब तो आया था... जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगे... अच्छा जी। ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। (फ़ोन का चोंगा रख देते हैं।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनट में आ जाते हैं।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।)



मोहन : माँ.... माँ... ओ....ओ... (उलटी आती है। उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है।) हाय, हाय!

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया? दोपहर को भला-चंगा गया था। कुछ समझ में नहीं आता! कैसा पड़ा है! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे

छेड़, उसे पछाड़, इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बड़ा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा!

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँ। वे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : (तेज़ी से कराहकर) अरे.... रे-रे-रे.... ओह!

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा? क्या हुआ?

मोहन : (रुआँसा-सा) बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है। ऐसे-ऐसे।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे? ऐसे क्या होता है?

मोहन : ऐसे-ऐसे। (पेट दबाता है।)

(वैद्य जी का प्रवेश)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन? मैंने कहा, जय राम जी की! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या?

(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं। वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ़्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला - मेरे पेट में दर्द होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है!

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझा नहीं पाता है।
(नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ। (मोहन जीभ निकालता है।) कब्ज है। पेट साफ़ नहीं हुआ। (पेट टटोलकर) हूँ, पेट साफ़ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा? (हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं।) ऐसे-ऐसे होता है ?

मोहन : (कराहकर) जी हाँ.... ओह!

वैद्य जी : (हर्ष से उछलकर) मैंने कहा न, मैं समझ गया। अभी पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो। (मोहन की माँ से) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है। दो-तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग! (वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट। (नोट देते हैं।)

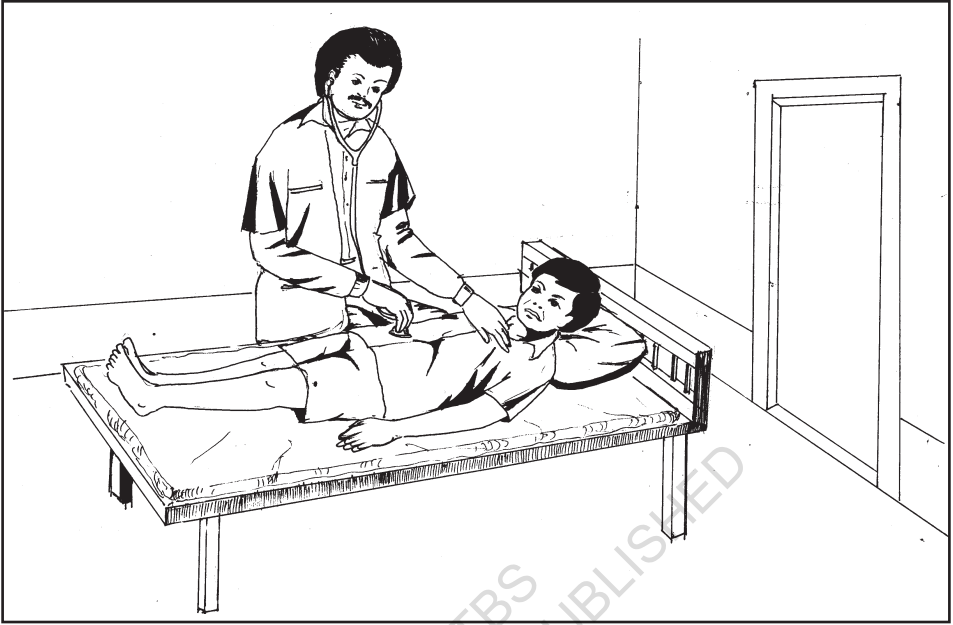
वैद्य जी : (नोट लेते हुए) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दो हैं?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं।)

डॉक्टर : हैलो मोहन! क्या बात है? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया?

(माँ और पिताजी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है। डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।



डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं।) अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। (मोहन जीभ निकालता है।) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है? ऐसे-ऐसे? (मोहन बोलता नहीं, कराहता है।)

माँ : बताओ, बेटा! डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी...जी... ऐसे-ऐसे। कुछ ऐसे-ऐसे होता है। (हाथ से बताता है। उँगलियाँ भीचता है।) डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता। (बराबर पेट टटोलता रहता है।)

माँ : (काँपकर) फोड़ा!

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिल्कुल नहीं है। (मोहन से) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो। (मोहन जीभ निकालता है।) हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहज़मी भी है। (उठते हुए) कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। (पिता से) क्यों न आप ही चलें! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंद़ा डाल लेती है। बस उसीकी ऐंठन है।

(डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(डॉक्टर जाते हैं। माँ बोतल उठाती है। पड़ोसिन आती है।)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन ?

माँ : आओ जी, रामू की काकी! कैसा क्या होता! लोचा-लोचा फिरे है। जाने वह 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया। नए-नए बुखार निकल आए हैं। वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं।

- माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है। (बाहर से आवाज़ आती है - 'मोहन! मोहन'! फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।)
- माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (पुकारकर) आ जाइए!
- मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है! क्यों, भाई? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माताजी, आपने क्या खिला दिया था इसे?
- माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।
- मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है।
- माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।
- मास्टर : अच्छा, मोहन तुम्हारा काम तो पूरा हो गया है न?
- मोहन : जी, सब नहीं हुआ।
- मास्टर : हूँ ! शायद सवाल रह गए हैं।
- मोहन : जी!
- मास्टर : तो यह बात है। 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है।



माँ : (चौंककर) क्या?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है।)

मास्टर : (हँसकर) कुछ नहीं, माताजी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा - 'ऐसे-ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। (मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है। माँ ठगी-सी देखती है। दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो

जान निकल गई। पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। (पिता से) देखा जी आपने!

पिता : (चकित होकर) क्या - क्या हुआ ?

माँ : क्या-क्या होता! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हैं!

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह !

पिता : वाह, बेटा जी, वाह! तुमने तो खूब छकाया!

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।)

लेखक परिचय - विष्णु प्रभाकर



विष्णु प्रभाकर जी का जन्म २१ जून १९१२ को मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के एक गाँव में हुआ। उनका बचपन हिसार (हरियाणा) में गुजरा। वहीं शिक्षा प्राप्त कर आपने प्रारंभ में सरकारी नौकरी की, जिसे छोड़ने के बाद आपने स्वतंत्र लेखन को अपनाया। वे कुछ दिन आकाशवाणी में अधिकारी भी रहे। कहानी इनकी प्रिय विधा

है। सन् १९३९ में इनका प्रथम एकांकी 'हंस' में प्रकाशित हुआ। तब से ये लगभग चालीस एकांकी लिख चुके हैं। इनकी रचनाओं में इन्सान और

एकांकी, क्या वह दोषी था, प्रकाश और परछाई, ये रेखाएँ, ये दायरें उल्लेखनीय हैं।

विष्णु जी मानव की मानसिक प्रवृत्तियों के कुशल आलोचक हैं। आपके एकांकियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, आर्थिक, ऐतिहासिक भूमिका पर प्रतिष्ठित मानवीय चरित्र का सूक्ष्म और सोद्देश्य चित्रण है। आप पर गाँधी जीवन-दर्शन का प्रभाव है।

शब्दार्थ :

अंट-शंट - मनमानी, कल - आराम, बला - कष्ट, गुलज़ार - खुश, मुक्का - मुट्ठी से मारना, धमा - चौकड़ी - उछल - कूद, छका - परेशान, कौलिक - चुभना, ऐंठन - तनाव।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) मोहन किस कक्षा का छात्र है ?
- २) वैद्य जी दवाई में क्या देते हैं ?
- ३) मोहन को कितने दिनों की छुट्टी मिली थी ?
- ४) मास्टर जी मोहन को और कितने दिनों की छुट्टी देते हैं ?

II. लिखित -

अ) एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) मोहन के पड़ोसी का नाम क्या है ?
- २) दीनानाथ किसे बुलाते हैं ?
- ३) डॉक्टर साहब कौन-सा उपचार बताते हैं ?
- ४) मास्टर जी दर्द कैसे पहचानते हैं ?

आ) तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) माँ मोहन को किस तरह सँभालती है ?
- २) वैद्य जी किस तरह का उपचार करते हैं ?
- ३) मोहन का पेट दर्द देखकर पिताजी कैसे परेशान हुए ?
- ४) डॉक्टर की क्या सलाह थी ?
- ५) मास्टर जी ने दर्द को कैसे दूर किया ?
- ६) 'ऐसे - ऐसे' दर्द क्यों था ?

इ) सन्दर्भ सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए :

- १) "इसने कहीं अंट-शंट तो नहीं खा लिया ?"
- २) "मैंने कहा - अरे गड़गड़ होती है ?"
- ३) "यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।"
- ४) "स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी।"

ई) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- १) देखो न कैसे रहा है।
- २) दोपहर को गया था।
- ३) यहाँ-वहाँ, हर कहीं ही मोहन।
- ४) तेरे पेट में तो बहुत है।

उ) जोड़कर लिखिए :

- | | | |
|-------------|---|---------------------|
| १) दीनानाथ | - | १) रामू की काकी |
| २) वैद्य जी | - | २) गरम पानी की बोतल |
| ३) पड़ोसिन | - | ३) ऐसे - ऐसे |

- घ) डॉक्टर - ४) एक पड़ोसी
 ड) मोहन - ५) पुड़िया

III.

भाषा बोध

ध्यान दीजिए : अल्पविराम (,), पूर्ण विराम (।), प्रश्नवाचक (?), उद्गारवाचक (!), उद्धरण चिह्न (“ ”), योजक (-), अर्धविराम (;) ये सभी विराम चिह्न हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए :

- १) पिताजी मेरे पेट में कुछ ऐसे-ऐसे हो रहा है
- २) कुछ समझ में नहीं आता कैसा पड़ा है
- ३) कहाँ है मोहन
- ४) बाहर से आवाज़ आती है - मोहन मोहन

योग्यता - विस्तार :

- * किसी एक हास्य घटना का वर्णन अपने ही शब्दों में कीजिए।
- * इस एकांकी का मंचन कीजिए।

रहीम के दोहे



आशय : रहीम ने मुख्यतः नीति तथा भक्ति के दोहों की रचना की है। ये दोहे जीवन-मूल्य, सामाजिक व्यवहार तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

१) तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान ।

कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजान ॥

२) बड़े बड़ाई न करैं, बड़ो न बोले बोल ।

रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मम मोल ॥

३) मनि मानिक महंगे किये, ससतो तून जल नाज ।

याही ते हम जानियत, राम गरीब निवाज ॥

४) मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस ।

बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ॥

५) रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो न प्रीति ।

काटे चाटे स्वान के, दोउ भांति विपरीति ॥

६) रहिमन गली है सांकरि, दूजो न ठहराहिं ।

आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं ॥

७) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।

जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ॥

८) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय ।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ परि जाय ॥

कवि परिचय - रहीम

अब्दुरहीम खानखाना सम्राट अकबर के मंत्री और सेनापति थे । नवरत्नों में इनकी गणना की जाती थी । सहृदय कवि होने के साथ - साथ वे शूर-वीर योद्धा भी थे । उनका जन्म १५५३ ई. में लाहौर में हुआ था । वे संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता थे । उनके काव्य में काव्यशास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ भक्ति तथा नीतिपरक रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं ।

शब्दार्थ :

संचहि - संचय (एकत्र) करते हैं, सुजान - अच्छे मनुष्य, तृन - वनस्पति, नाज - अनाज, गरीब निवाज - गरीबों के रक्षक, संभु - शंभु (शिव), ओछा - नीच, स्वान - कुत्ता, सांकरि - संकरी (तंग), दूजो-दूसरा, छिटकाय - चटकाओ ।

अभ्यास

I. मौखिक -

- १) अच्छे लोग क्या करते हैं ?
- २) बड़े लोग किसके समान होते हैं ?
- ३) राम किसके रक्षक हैं ?
- ४) शिव ने क्या किया था ?
- ५) हमें किसको महत्व देना चाहिए ?
- ६) प्रेम का धागा टूटने पर क्या होता है ?

II. लिखित -

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

- १) वृक्ष और नदी क्या नहीं करते ?
- २) हीरा क्या नहीं करता ?
- ३) राम ने गरीबों के लिए क्या किया है ?
- ४) बुरे लोगों के साथ कैसा सम्बंध बनाना चाहिए ?
- ५) भगवान को मन में रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
- ६) हमें छोटों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
- ७) प्रेम का धागा कैसे रखना चाहिए ?

आ) चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) रहीम ने परोपकारी मनुष्य के बारे में क्या कहा है ?
- २) रहीम ने बड़े व्यक्तियों की तुलना के लिए किसका उदाहरण दिया है और उनमें क्या समानता दिखाई है ?
- ३) बुरे व्यक्तियों के साथ रहने पर क्या हो सकता है ?
- ४) हमें हर छोटी वस्तु और हर व्यक्ति का महत्व समझना चाहिए।

यह भाव आपको किस दोहे में मिलता है, चुनकर लिखिए।

- ५) किसीके साथ मित्रता या प्रेम को क्यों नहीं तोड़ना चाहिए ?

इ) सन्दर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए :

- १) मनि मानिक महंगे किए, ससतो तून जल नाज।
याही ते हम जानियत, राम गरीब निवाज ॥
- २) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ परि जाय ॥

III. पहले दो दोहों को कंठस्थ कीजिए ।

IV. भाषा - बोध

ध्यान दीजिए - रहीम की प्राचीन भाषा के क्रिया पदों को वर्तमान भाषा में हम इस प्रकार लिखते हैं -

१) पियहिं = पीते हैं, संचहि = संचय करते हैं ।

इसे ध्यान में रखकर निम्नलिखित शब्दों के प्राचीन रूप बताइए :

१) कर २) आ ३) जा ४) खा ५) देख

२) आधुनिक खड़ीबोली में काज - कार्य । इसी प्रकार निम्न शब्दों के आधुनिक रूप लिखिए :

१) ससतो २) सीस ३) दोउ ४) दूजो ५) कहा

३) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन समानार्थक शब्द लिखिए:

१) तरु २) फल ३) जल ४) नर

योग्यता - विस्तार :

- * अकबर के नवरत्नों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए ।
- * अन्य सन्त कवियों के नीतिपरक दोहों का संकलन कर कक्षा में सुनाइए ।

वचन (Number)

परिभाषा-शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

प्रकार - हिंदी में दो वचन हैं - एकवचन और बहुवचन।

एकवचन - शब्द के जिस रूप से उसके एक (संख्या में) होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, पतंग, पुस्तक, गाड़ी, पुरुष आदि।

बहुवचन - शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - लड़के, पतंगें, पुस्तकें, गाड़ियाँ, स्त्रियाँ आदि।

वचन संबंधी नियम

साधारणतः एक संख्या के लिए एकवचन का और अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है, लेकिन -

१. आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है, जैसे -

(क) महात्मा बुद्ध महान थे। (ख) मेरे पिता व्यापारी हैं।

(ग) गाँधीजी अहिंसा के पुजारी थे।

(घ) गुरुजी आ रहे हैं। (ङ) माताजी पहुँच गई होंगी।

२. अपना अधिकार, अभिमान या बड़प्पन जताने के लिए भी 'मैं' के स्थान पर कभी-कभी लोग 'हम' बहुवचन का प्रयोग करते हैं। मालिक नौकर से प्रायः ऐसे बात करता है। जैसे-

क) हड़क जा रहे हैं ! हड़क़ारे लिए खाना ताओ

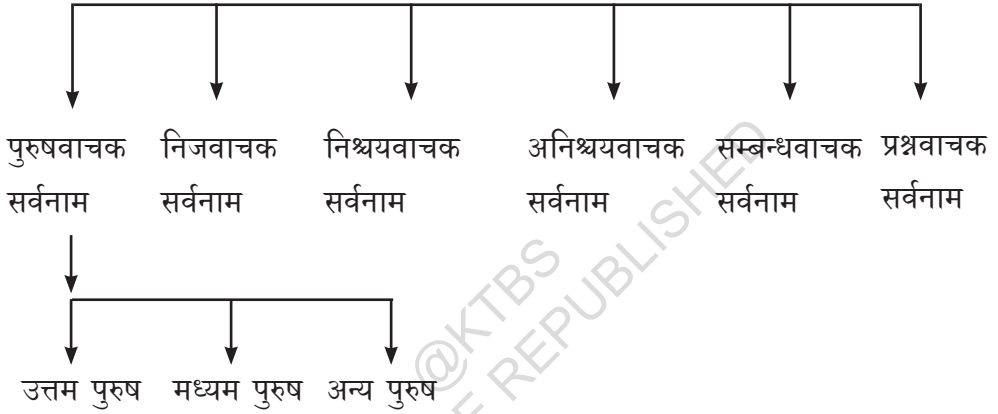
ख) अकबर ने कहा - हमें शांति चाहिए ।

सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें सर्वनाम कहते हैं ।

उदाहरण : मैं, तू, आप (स्वयं), यह, वह, जो, कोई, कुछ, कौन, क्या ।

सर्वनाम के भेद



पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - मैं, तुम, हम, आप, वे ।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं :

उत्तम पुरुष :

इन सर्वनाम का प्रयोग बात कहने या बोलने वाला अपने लिए करता है ।

उदाहरण : मैं, मुझे, मेरा, मुझको, हम, हमें, हमारा, हमको ।

मध्यम पुरुष :

इन सर्वनाम का प्रयोग बात सुनने वाले के लिए किया जाता है ।

उदाहरण : तू, तुझे, तेरा, तुम, तुम्हे, तुम्हारा ।

आदर सूचक : आप, आपको, आपका, आप लोग, आप लोगों को आदि ।

अन्य पुरुष :

इन सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अन्य किसी व्यक्ति के लिए करता है ।

उदाहरण : वह, उसने, उसको, उसका, उसे, उसमें, वे, इन्होंने, उनको, उनका, उन्हें, उनमें आदि ।

निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द करता के स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे : स्वयं, आप ही, खुद, अपने आप ।

उसने अपने आप को बर्बाद कर लिया ।

श्वेता आप ही चली गयी ।

नोट: इसके 'आप' का प्रयोग अपने लिए / स्वयं (शिश्प्रष) होता है आदर सूचक 'आप' के लिए नहीं ।

निश्चयवाचक सर्वनाम :

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे : यह, वह, ये, वे ।

यह मेरी घड़ी है ।

वह एक लड़का है ।

वे इधर ही आ रहे हैं ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता है उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे : कुछ, किसी ने (किसने), किसी को, किन्हीं ने, कोई, किन्हीं को ।

लस्सी में कुछ पड़ा है ।

भिखारी को कुछ दे दो ।

कौन आ रहा है ।

राम को किसने बुलाया है ।

शायद किसी ने घंटी बजायी है ।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम :

जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे : जो-सो, जहाँ-वहाँ, जैसा-वैसा, जौन-तौन ।

जहाँ चाह वहाँ राह ।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे ।

वह कौन है जो रो पड़ा ।

जो सो गया वो खो गया ।

जो करेगा सो भरेगा ।

प्रश्नवाचक सर्वनाम :

जिन सर्वनाम से वाक्य में प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे : कौन, कहाँ, क्या, कैसे ।

रमेश क्या खा रहा है ।

कमरे में कौन बैठा है ।

वे कल कहाँ गए थे ।

आप कैसे हो ।

नोट : कुछ सर्वनाम शब्द ऐसे भी होते हैं जिन्हें संयुक्त सर्वनाम की कोटि में रखा गया है ।

जैसे : जो कोई, सब कोई, कुछ और, कोई न कोई ।

जो कोई आए उसे रोक लो ।

जाओ, वहाँ कोई न कोई तो मिल ही जायेगा ।

देखो, कुछ और लोग वहाँ हैं ।

कोई-कोई तो बिना बात बहस करता है ।

कौन-कौन आ रहा है ।

किस-किस कमरे में छात्र पढ़ रहे हैं ।

अपना-अपना बस्ता उठाओ और घर जाओ ।

अब कुछ-कुछ याद आ रहा है ।

(क) हम जा रहे हैं। हमारे लिए खाना लाओ।

(ख) अकबर ने कहा-हमें शांति चाहिए।

३. कुछ संज्ञा शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे -

लोग, दर्शन, प्रजा, प्राण, बाल, होश, आँसू, हस्ताक्षर आदि।

(क) कृपया अपने आँसू पोंछ डालिए। (ख) भय से उसके तो प्राण ही निकल गए।

(ग) पुलिस को देखकर जगमोहन के होश उड़ गए। (घ) मेरे बाल झड़ते हैं।

(ङ) आजकल लोग सीधे मुँह बात तक नहीं करते। (च) आज बेटे के दर्शन हुए।

४. आजकल 'तू' एकवचन सर्वनाम का अपमानार्थ या अत्यंत छोटे अथवा अत्यंत प्रिय के लिए ही प्रयोग किया जाता है। सम्मान प्रकट करने के लिए 'तू' के स्थान पर 'तुम' संबोधन किया जाता है।

५. जनता, वर्षा, पानी, दूध, आग, पुलिस, भीड़, आदि शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे - (क) जनता ने आंदोलन छेड़ दिया है। (ख) कल बहुत वर्षा हुई थी।

(ग) मुझे ठंडा पानी चाहिए। (घ) उसे गर्म दूध दो।

(ङ) मकान को आग ने घेर लिया। (च) पुलिस आ गई तो भीड़ रुक गई।

६. कुछ एकवचन शब्द - गण, लोग, जन, वृंद, आदि समूहवाचक शब्दों के साथ जुड़कर बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे -

(क) अध्यापक गण यहाँ बैठें ।

(ख) मज़दूर लोग अपने काम पर जाएँ ।

(ग) छात्रवृंद आजकल ग्रीष्मावकाश का आनंद ले रहे हैं।

जिन शब्दों के साथ जाति, दल, सेना, समूह आदि प्रयुक्त होता है, उनका प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे-

(क) मनुष्य-जाति को स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए।

(ख) छात्र-दल विश्राम कर रहा है।

(ग) जन-समूह कल यहाँ एकत्र होगा।

७. भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे -

(क) इन आमों में मिठास है।

(ख) कार्यक्रमों की सुंदरता मन को मोह लेती है।

८. धातुओं का बोध करानेवाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे-

(क) सोना बहुत चमकीला है और लोहा मज़बूत है।

(ख) चाँदी महंगी है, और स्टील सुंदर।

९. अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत, ओकारांत तथा औकारांत पुल्लिङ्ग शब्द परसर्ग-रहित होने पर

बहुवचन और एकवचन दोनों स्थितियों में एक-समान रहते हैं; परंतु उनके क्रियारूप का यथारूप व्यवहार करते हैं। जैसे-

एकवचन

बहुवचन

बालक खेलता है।

बालक खेलते हैं।

डमरू बिक गया।

डमरू बिक गए।

छात्र जाता है।

छात्र जाते हैं।

वचन बदलने के नियम

नीचे लिखे वाक्य देखिए-

उनके पास **कारें** हैं। वे **कारों** पर सवार हैं।

अनेक **लड़के** जा रहे थे। अनेक **लड़कों** ने जाने का कार्यक्रम बनाया।

-इन वाक्यों में कारें, कारों, लड़के, लड़कों, बहुवचन के रूप हैं। अतः यह है कि 'कारें' और 'लड़के' विभक्ति-रहित हैं, जबकि 'कारों' और 'लड़कों' विभक्ति-सहित हैं। अतः बहुवचन दो प्रकार के होते हैं -

(क) विभक्ति-रहित बहुवचन।

(ख) विभक्ति-सहित बहुवचन।

(क) विभक्ति-रहित बहुवचन बनाने के नियम

पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के वचन-परिवर्तन-आकारांत संज्ञाओं के अंतिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर दिया जाता है। जैसे-

एकवचन	बहुवचन
कपड़ा	कपड़े
घड़ा	घड़े
घोड़ा	घोड़े

अपवाद - (i) कुछ शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे
- संबंधसूचक शब्दों में-काका, मामा, लाला,
पापा, नाना, चाचा, आदि।

पदसूचक शब्दों में - दरोगा, पंडा, ओझा, आदि।

कुछ अन्य आकारांत संस्कृत पुल्लिङ्ग शब्दों में - राजा, कर्ता,
पिता, युवा, देवता, चंद्रमा आदि।

(ii) अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत और
ऊकारांत पुल्लिङ्ग शब्द के दोनों वचनों के रूप
समान रहते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कवि	कवि	योगी	योगी
बालक	बालक	साधु	साधु

स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के वचन-परिवर्तन-

(i) 'अ' को 'एँ' - अकारांत स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के अंत में आने वाले
'अ' को 'एँ' कर देते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें	पुस्तक	पुस्तकें
कलम	कलमें	बहन	बहनें
किताब	किताबें	बात	बातें

(ii) **याँ-** इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'याँ' जोड़कर एकवचन को बहुवचन बनाया जाता है। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ	राशि	राशियाँ
तिथि	तिथियाँ	लिपि	लिपियाँ
निधि	निधियाँ	शक्ति	शक्तियाँ

(iii) **‘ई’ को ‘इयाँ’** - ईकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं की अंतिम वर्ण 'ई' को 'इयाँ' कर दिया जाता है। यथा-

घोड़ी	घोड़ियाँ	मछली	मछलियाँ
टोपी	टोपियाँ	रोटी	रोटियाँ
थाली	थालियाँ	लड़की	लड़कियाँ

(iv) **अनुनासिक-**(ँ)-'या' से अंत होने वाली संज्ञाओं को बहुवचन बनाने के लिए अंत में अनुनासिक (ँ) जोड़ दिया जाता है। जैसे -

कुतिया	कुतियाँ	डिबिया	डिबियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	बुड़िया	बुड़ियाँ

(v) 'ए'-ऊकारांत, आकारांत, औकारांत, आदि शेष स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाए जाते हैं। और 'ऊ' को ह्रस्व कर दिया जाता है। जैसे -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जैसे : अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	धेनु	धेनुएँ
आत्मा	आत्माएँ	बहू	बहुएँ
कथा	कथाएँ	भावना	भावनाएँ

(ख) विभक्ति सहित संज्ञाओं को बहुवचन बनाने के नियम-

(i) 'ओं' का समावेश-संज्ञाओं के अंतिम वर्ण 'अ' तथा 'आ' के स्थान पर 'ओं' हो जाता है। जैसे-

खरबूजा	खरबूजों	बंदर	बंदरों
घर	घरों	बूढ़ा	बूढ़ों
घोड़ा	घोड़ों	मूर्ख	मूर्खों

(ii) 'आ' से समाप्त होने वाले जिन शब्दों के विभक्ति-रहित रूपों के बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता, उनके विभक्ति-सहित रूपों के अंत में बहुवचन बनाने के लिए 'ओं' प्रत्यय लगता है। जैसे -

राजा	राजाओं	माता	माताओं
लता	लताओं	योद्धा	योद्धाओं

(iii) उकारांत या ऊकारांत शब्दों के अंत में 'ओं' लगाकर बहुवचन बनाए जाते हैं। ऐसी स्थिति में 'ऊ' का ह्रस्व 'उ' हो जाता है।

जैसे -

गुरु	गुरुओं	भालू	भालुओं
डाकू	डाकुओं	वधू	वधुओं
बहु	बहुओं		

(iv) ओ-‘अ’ और ‘आ’ से समाप्त होने वाले शब्दों में संबोधन करते समय अंतिम स्वर बदलकर ‘ओ’ हो जाता है। जैसे -

कन्या	कन्याओ!	लड़का	लड़को!
बहन	बहनो!	लोग	लोगो!

(v) यों-‘इ’ तथा ‘ई’ - से अंत होने वाले विभक्ति- युक्त बहुवचन में ‘यों’ लगता है। ऐसी स्थिति में ‘ई’ का ह्रस्व ‘इ’ हो जाता है। जैसे -

कहानी	कहानियों	मुनि	मुनियों
गली	गलियों	रात्रि	रात्रियों
गाड़ी	गाड़ियों	लड़की	लड़कियों

(vi) यो-संबोधन करते समय इकारांत शब्दों में ‘यो’ का समावेश हो जाता है। जैसे -

मुनि	मुनियो!	भाई	भाइयो !
लड़की	लड़कियो !	सिपाही	सिपाहियो !

विशेषण (Adjective)

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों (पदों) पर ध्यान दीजिए :

१. मदन काली कमीज़ पहनकर स्कूल आया।
२. मेरा छोटा भाई बहुत शरारती है।
३. आपके लिए वे मीठे संतरे लेकर आए हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'काली', 'छोटा' तथा 'मीठे' शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं के गुण बता रहे हैं कि कमीज़ का रंग काला है, भाई छोटा है तथा संतरों का स्वाद मीठा है। 'पाँच लीटर', 'थोड़ी - सी' शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं का परिमाण (मात्रा) बता रही हैं। 'दस-बारह' से मज़दूरों की संख्या का पता चल रहा है तथा 'मेरा' बेटे के विषय में बता रहा है कि वह किसका बेटा है। कहने का तात्पर्य है कि ये समस्त शब्द किसी-न-किसी रूप में अपने आगे आने वाली संज्ञाओं की किसी-न-किसी विशेषता को प्रकट कर रहे हैं। व्याकरण में ये शब्द संज्ञा के पूर्व लगकर उसकी विशेषता बताते हैं। अतः इन्हें 'विशेषण' कहा जाता है।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं, 'विशेषण' कहे जाते हैं।

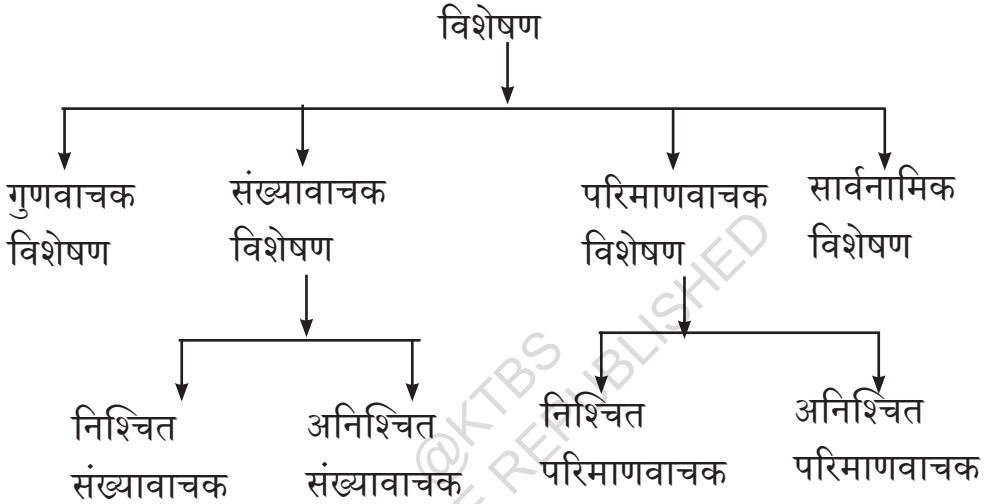
विशेषण शब्द जिस शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताते हैं, उन शब्दों को 'विशेष्य' के नाम से जाना जाता है। जैसे-लड़की, सरला, रघु, वह आदि।

इस प्रकार हम पाते हैं कि विशेषण के प्रयोग से विशेष्य वस्तु का यथार्थ परिचय तो मिलता ही है, साथ ही साथ भाषा भी प्रभावशाली हो

जाती है। 'विशेषण' व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, आदि का स्वरूप स्पष्ट कर, उसे उसके वर्ग से अलग दर्शाकर उसकी विशेषताओं का परिचय देता है।

विशेषण के भेद

अर्थ की दृष्टि से विशेषण के मुख्य चार भेद हैं :



१. गुणवाचक विशेषण
२. संख्यावाचक विशेषण
३. परिमाणवाचक विशेषण
४. सार्वनामिक विशेषण

१. **गुणवाचक विशेषण**-संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध कराने वाले शब्द 'गुणवाचक विशेषण' कहलाते हैं। जैसे - वह व्यक्ति दयावान हैं। अन्य कुछ उदा : अच्छा, दानी, काला, लंबा आदि।

गुणवाचक विशेषण के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के विशेषण पाए जाते हैं:

१. गुणबोधक - अच्छा, दानी, न्यायी, कृपालु।
२. दोषबोधक - झूठा, पापी, दुष्ट, कंजूस, अभिमानी।
३. स्वादबोधक - खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन।
४. गंधबोधक - खुशबूदार, सुगंधित, दुर्गंधित, बदबूदार।
५. रंगबोधक - काला, पीला, सुनहरा, नीला, हरा।
६. आकारबोधक - मोटा, लंबा, छोटा, चौकोर, गोल।
७. स्पर्शबोधक - कठोर, नरम, गुदागुदा, मुलायम, नरम, सख्त।
८. ध्वनिबोधक - मधुर, कर्कश।
९. कालबोधक - कल, परसों, पुरानी, प्राचीन, नवीन, क्षणिक, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक।
१०. स्थानबोधक - ग्रामीण, शहरी, विदेशी, जयपुरी, चीनी।
११. दशाबोधक - रोगी, निरोगी, रुग्ण, बीमार, बिगड़ा हुआ।
१२. स्थितिबोधक - अगला, पिछला, पहला, पाँचवाँ, अंतिम।
१३. दिशाबोधक - पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, भीतरी, बाहरी।
१४. अवस्थाबोधक - गीला, सूखा, नम, शुष्क, तला हुआ, जला हुआ।

२. **संख्यावाचक विशेषण** - जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, वह 'संख्यावाचक विशेषण' कहलाते हैं। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं :

(क) निश्चित संख्यावाचक (ख) अनिश्चित संख्यावाचक

(क) निश्चित संख्यावाचक - जिनसे निश्चित संख्या का बोध होता है, वे 'निश्चित संख्यावाचक विशेषण' कहलाते हैं। जैसे-दस विद्यार्थी, पाँच केले, चार वृक्ष आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक - इनसे निश्चित संख्या का बोध नहीं होता। जैसे -कुछ आम, थोड़े केले, कुछ लड़के, कई दर्शक आदि।

३. **परिमाणवाचक** - मात्रा या तोल बताने वाले विशेषणों को 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं। जैसे-दस किलो चावल, चार किलो आटा, चार गज़ ज़मीन, थोड़ा अनाज़ आदि।

परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद हैं -(क) निश्चित परिमाणवाचक, (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक

(क) **निश्चित परिमाणवाचक** - जिन शब्दों से निश्चित परिमाण का बोध होता है, वे 'निश्चित परिमाणवाचक' विशेषण कहलाते हैं। जैसे-चार किलो दाल, दो मीटर कपड़ा आदि।

(ख) **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - जिन शब्दों से परिमाण की अनिश्चितता का बोध हो, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-कुछ दाल, थोड़ा आटा, बहुत चीनी आदि।

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर - संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग गणनीय वस्तुओं के लिए होता है, जबकी

परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग अगणनीय वस्तुओं के लिए किया जाता है। सेब, पेंसिल, लड़के आदि गणनीय वस्तु हैं तो चावल, कपड़ा, ज़मीन आदि अगणनीय वस्तु।

४. सार्वनामिक विशेषण - जिन सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे -

वह लड़का भला है।

कोई स्त्री द्वार पर आकर खड़ी है।

यह पुस्तक तुम्हारी है।

इन वाक्यों में वह, कोई, तथा यह सर्वनाम होते हुए भी विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं। इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। पुरुषवाचक (मैं, हम, तू, तुम) तथा निजवाचक (आप) सर्वनामों के अलावा शेष सभी सर्वनाम, सार्वनामिक रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। पाया जाता है कि पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनाम के संबंधकारकीय रूप विशेषण के समान प्रयुक्त किए जा सकते हैं। जैसे-मैं से मेरा, मेरी; तुम से तुम्हारा, तुम्हारी तथा हम से हमारा, हमारी।

५. सार्वनामिक विशेषण तथा सर्वनाम - कुछ लोग सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषणों में अंतर नहीं करते। वस्तुतः दोनों रूप-रचना के स्तर पर समान होते हैं, केवल वाक्य में प्रयोग के स्तर पर दोनों में अंतर हो जाता है।

‘सर्वनाम’ के विषय में आप जानते ही हैं कि ये वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं और वही प्रकार्य (function) करते हैं जो वह संज्ञा कर रही थी। जैसे- ‘मोहन ईमानदार लड़का है। वह कभी झूठ

नहीं बोलता। उसके पिताजी अध्यापक हैं'। लेकिन जब सर्वनाम किसी संज्ञा (विशेष्य) के साथ लगकर उस संज्ञा की विशेषता बताते हैं तब वे **सार्वनामिक विशेषण** कहे जाते हैं, जैसे -

(क) **किसकी** किताब चोरी हुई थी?

(ख) **मेरे** भाई अमेरिका जा रहे हैं।

(ग) उनके पास खाने के लिए **कुछ भी** सामान नहीं है।

विशेषण शब्दों की रचना - कुछ शब्द मूल रूप में ही विशेषण होते हैं। लेकिन कुछ शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया) की रचना उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर की जाती है। जैसे-वर्ष से वार्षिक, अंक से अंकित, पुष्प से पुष्पित।

उपसर्गों से विशेषण रचना

शब्द में 'अ' जोड़कर :

अ + समर्थ = असमर्थ, अयोग्य, अबोध।

शब्द में 'स' जोड़कर :

स + पूत = सपूत, सजल, सफल, सजीव।

नि जोड़कर :

'नि': + दोष = निर्दोष, निर्मम, निर्गुण, निर्मल, निष्ठुर।

'बे' जोड़कर :

बे + ईमान = बेईमान, बेवकूफ, बेचारा, बेकसूर।

'ला' जोड़कर :

ला + इलाज = लाइलाज, लाचार, लावारिस, लाजवाब।

प्रत्ययों से विशेषण रचना

शब्द	विशेषण	शब्द	-	विशेषण
इक	धर्म - धार्मिक	अलंकार	-	आलंकारिक
	आत्मा - आत्मिक	लोक	-	लौकिक
	करुणा - कारुणिक	संप्रदाय	-	सांप्रदायिक
	मास - मासिक	इच्छा	-	ऐच्छिक
	नगर - नागरिक	सप्ताह	-	साप्ताहिक
	परिवार - परिवारिक	मुख	-	मौखिक
	पक्ष - पाक्षिक			
इत्	ध्वनि - ध्वनित	अपमान	-	अपमानित
	लक्ष्य - लक्षित	योजना	-	योजित
	उपेक्षा - उपेक्षित	तरंग	-	तरंगित

क्रिया

जिस शब्द से कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।
जैसे :

(क) बबिता खाना खा रही है। (ख) बच्चे खेल रहे हैं।

यदि इन वाक्यों के साथ हम 'क्या करता है' या 'क्या कर रहा है' ?
आदि प्रश्नों को जोड़कर उनका उत्तर ढूँढ़ें तो क्रमशः 'खाना खा रही है'

तथा 'खेल रहे हैं' उत्तर प्राप्त होंगे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वाक्य का जो अंश इन प्रश्नों का उत्तर देता है, उसे क्रिया कहते हैं। बिना क्रिया के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता। क्रिया को देखकर ही कर्ता या कर्म का अनुमान लगाया जा सकता है। कर्ता एकवचन है या बहुवचन, पुल्लिङ्ग है या स्त्रीलिङ्ग, सजीव है या निर्जीव, उत्तम पुरुष में, मध्यम पुरुष में या अन्य पुरुष में है, इसकी जानकारी भी क्रिया के द्वारा ही होती है। काल का ज्ञान भी क्रिया से ही होता है।

धातु - धातु का अर्थ है : मूल या बीजाक्षर। किसी क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप से मिलता है, उसे उस क्रिया की धातु कहा जाता है। इस प्रकार “क्रिया के मूल रूप ‘को’ धातु कहते हैं”। जिस प्रकार सोना, चाँदी, आदि धातुओं से हार, कंगन, झुमके, बालियाँ, नथ, इत्यादि आभूषण बनाए जाते हैं, उसी प्रकार ‘चल’ धातु से चलना, चला, चले, चलो, चलेंगे; ‘पढ़’ धातु से पढ़ना, पढ़े, पढ़ेगा, इत्यादि क्रिया पद रूप बनाए जाते हैं। आ, जा, खा, पी, चल, सुन, देख, पढ़, आदि प्रत्येक धातु के मूल रूप में ‘ना’ जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है। जैसे-आना, जाना, खाना, पीना, चलना, सुनना, देखना, पढ़ना, आदि। ये ‘क्रियाएँ संज्ञा’ का भी काम करती हैं और कर्म का भी। ऐसे रूपों को क्रियार्थक संज्ञा कहा जाता है। इन क्रियाओं में से ‘ना’ निकाल देने से क्रिया पुनः धातु में परिवर्तित हो जाती है।

पढ़ + ना = पढ़ना, मार + ना = मारना, उठ + ना = उठना।

मूल धातु का प्रयोग मात्र ‘तू’ के साथ आज्ञार्थक क्रिया के रूप में ही किया जाता है। जैसे-तू मेरे साथ चल; तू खाना खा; तू कहानी सुन। कुछ धातुओं का प्रयोग शुद्ध भाववाचक संज्ञा की तरह होता है जैसे-समझ, लूट, डर, मार, माँग, आदि।

उदाहरण :

(क) यह बात उसकी समझ में नहीं आई।

(ख) चोर घर को लूट कर चले गए।

क्रिया की रचना

क्रिया की रचना तीन प्रकार के शब्दों से होती है :

धातु से - पढ़ = पढ़ना, पढ़ता।

खा = खाना, खाता, खाया।

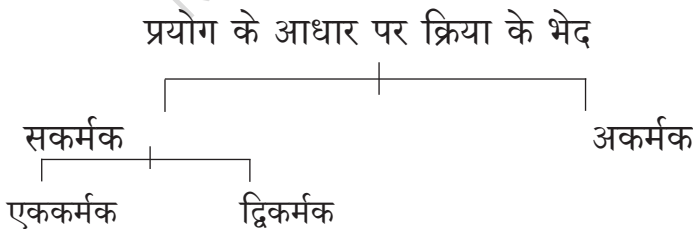
संज्ञा से - आलस्य = अलसाना, अलसाता।

फरकार = फटकारना, फटकारता।

विशेषण से - टिमटिम = टिमटिमाता, टिमटिमाना।

भिनभिन = भिनभिनाना, भिनभिनाता।

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद -



प्रयोग के आधार पर क्रिया के मुख्य दो भेद हैं :

१. सकर्मक

२. अकर्मक

१. **सकर्मक** - सकर्मक का अर्थ है - कर्म के साथ। जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है, जैसे-बच्चा दूध पी रहा है।

राधा किताब पढ़ रही है।

इन वाक्यों के कर्ता और क्रिया के बीच यदि 'क्या' प्रश्न किया जाए, तो उत्तर स्वरूप क्रमशः 'दूध' तथा 'किताब' आते हैं। जैसे - बच्चा क्या पी रहा है, दूध; राधा क्या पढ़ रही है, 'किताब' सकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी पहचान यही है।

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद हैं :

(क) **एककर्मक** - जिस क्रिया का मात्र एक ही कर्म होता है, वह 'एककर्मक' क्रिया कहलाती है। जैसे :

राधा कपड़े धो रही है। माँ खाना बना रही है।

(ख) **द्विकर्मक** - जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, वह 'द्विकर्मक क्रिया' कहलाती है। इन दो कर्मों में प्रथम कर्म प्राणीवाचक तथा द्विकर्मक कर्म अप्राणीवाचक होता है। प्राणीवाचक कर्म गौण कर्म तथा अप्राणीवाचक कर्म प्रायः मुख्य कर्म होता है। मुख्य कर्म विभक्ति चिह्न राहित तथा गौण कर्म विभक्ति चिह्न सहित होता है। जैसे :

माला ने राधा को पुस्तक दी। पिता ने पुत्र को पैसे दिए।

इन वाक्यों की क्रिया के साथ यदि 'क्या', 'कैसे' और 'किसको' प्रश्नों को किया जाए तो उत्तर क्रमशः 'पुस्तक' और 'राधा' तथा 'पैसे' और 'पुत्र' आते हैं। जैसे - माला ने राधा को पुस्तक दी। क्या दी? पुस्तक दी। कैसे दी? राधा को दी। द्विकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी पहचान यही है।

कुछ प्रमुख अकर्मक क्रियाएँ :

अकड़ना, डूबना, आना, उगना, जाना, उछलना, कूदना, गिरना, बैठना, दौड़ना, ठहरना, सोना, जागना, बढ़ना, आदि।

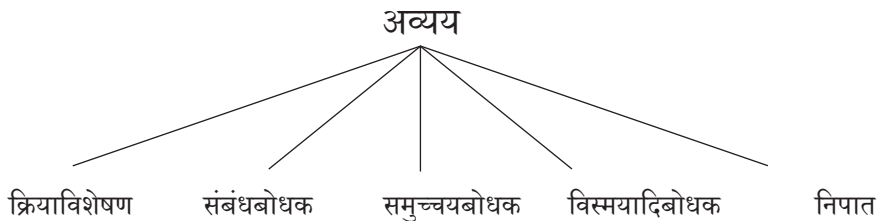
अकर्मक से सकर्मक क्रिया बनाना :

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
ठहरना	- ठहराव	कूदना	- कूदा
लेटना	- लेटाना	हँसना	- हँसी
गिरना	- गिराना, गिरावट	तड़पना	- तड़पाना

अव्यय

‘अव्यय’ शब्द का अर्थ है, जिस शब्द का कुछ भी व्यय न होता हो। अतः अव्यय वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, काल, आदि व्याकरणिक कोटियों के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं होता। अतः अव्यय शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है। आज, कल, तेज, धीरे, ओह, किंतु, पर, ताकि आदि अव्यय के उदाहरण हैं।

अव्यय शब्दों के भेद



१. क्रियाविशेषण

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे शब्दों पर ध्यान दीजिए -

(क) बच्चे **धीरे-धीरे** चल रहे थे।

(ख) वे लोग **रात को** पहुँचे ।

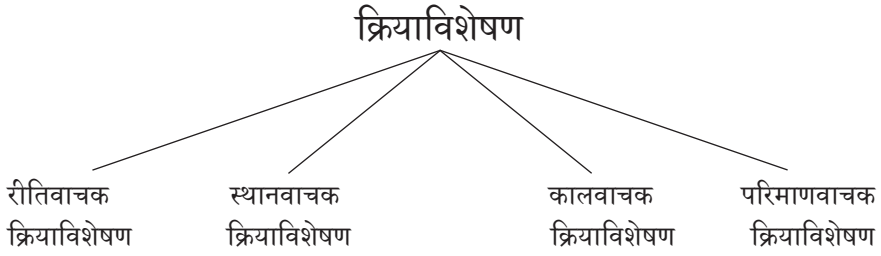
(ग) आप **यहाँ** बैठिए।

(घ) बच्चा **बहुत** रोया।

मोटे शब्द, क्रिया के पहले लगकर उसकी विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि

वे अविकारी (अव्यय) शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, क्रियाविशेषण कहे जाते हैं।

क्रिया की विशेषता प्रायः चार प्रकार से बताई जाती है। क्रिया किस रीति से संपन्न हो रही है, जैसे - धीरे-धीरे; तेज़ी से। कहाँ घटित हो रही है, जैसे - यहाँ, वहाँ। कब घटित हो रही है, जैसे - शाम को, सुबह को, रात को। इसके अलावा क्रिया की मात्रागत विशेषता भी थोड़ा, बहुत, काफ़ी आदि शब्दों से बताई जा सकती है। इन्हीं आधारों पर क्रियाविशेषण के चार भेद हो जाते हैं -



i) रीतिवाचक

ii) स्थानवाचक

iii) कालवाचक

iv) परिमाणवाचक

i) **रीतिवाचक क्रियाविशेषण** - जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया के घटित होने की विधि या रीति से संबंधित विशेषता का पता चलता है, वे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। इसकी पहचान के लिए क्रिया पर 'कैसे/किस प्रकार' के प्रश्न करने चाहिए। इनके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होता है, वह 'रीतिवाचक क्रियाविशेषण' है। जैसे - 'गाड़ी तेज़ चल रही है' वाक्य में यदि पूछा जाए कैसे चल रही है? तो उत्तर मिलेगा 'तेज़'। अतः 'तेज़' रीतिवाचक क्रियाविशेषण है। रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्दों के अन्य उदाहरण हैं - अचानक, तेज़ी से, भली-भाँति, जल्दी से आदि। देखिए कुछ वाक्य -

(क) गाड़ी प्लेटफार्म पर **अचानक** आ गई।

(ख) मैं उनसे **भली-भाँति** परिचित हूँ।

(ग) तुम तो **झटपट** काम करो।

ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण - क्रिया के घटित होने के स्थान के विषय में बोध कराने वाले क्रियाविशेषण शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे-यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आसपास, घर में, स्टेशन पर आदि।

ये दो प्रकार के होते हैं-

(क) स्थितिबोधक: जैसे-आगे, पीछे, आर-पार, भीतर, बाहर, सर्वत्र, पास, दूर, यहाँ, वहाँ आदि।

(ख) दिशाबोधक: जैसे-ऊपर की ओर, नीचे की तरफ, इधर-उधर, चारों ओर आदि।

स्थानवाचक क्रियाविशेषणों की पहचान के लिए क्रिया पर 'कहाँ' प्रश्न करना चाहिए। इसके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होता है, वह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है। जैसे 'कमला ऊपर बैठी है' - वाक्य में यदि पूछा जाए-कहाँ बैठी है ? तो उत्तर मिलेगा 'ऊपर'। अतः 'उत्तर' स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

(iii) कालवाचक क्रियाविशेषण - वे शब्द जो क्रिया के घटित होने के समय से संबंध विशेषता को बताते हैं, कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। जैसे-आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज़, सुबह, अकसर, रात को, चार बजे, हर साल आदि। इनकी पहचान के लिए क्रिया पर 'कब' प्रश्न करना चाहिए। इसके उत्तर में जो शब्द प्राप्त होगा, वह

कालवाचक क्रियाविशेषण है। जैसे-‘गुरु जी अभी आए हैं’- वाक्य में यदि पूछा जाए-कब आए? तो उत्तर मिलेगा ‘अभी’। अतः ‘अभी’ कालवाचक क्रियाविशेषण है।

कालवाचक क्रियाविशेषण तीन प्रकार के होते हैं-

(i) काल बिंदुवाचक : प्रातः, सायं, आज, अभी, अब, जब कभी, कल आदि।

(ii) अवधिवाचक : हमेशा, लगातार, आजकल, सदैव, दिनभर, नित्य आदि।

(iii) अवधिवाचक : नित्य, रोज़, हर बार, बहुधा, प्रतिदिन आदि।

(iv) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण-जिन क्रियाविशेषण से क्रिया के परिमाणों या मात्रा से संबंधित विशेषता का पता चलता है, वेद परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। इन शब्दों से यह पता चलता है कि क्रिया मात्रा में हुई। अतः इनकी पहचान के लिए क्रिया पर ‘कितना/कितनी’ प्रश्न करना चाहिए। कुछ उदाहरण देखिए-

१. वह दूध बहुत पीता है।

२. मैं जितना खाता हूँ, उतना मोटा होता हूँ।

३. वह थोड़ा ही चल सकी।

इन वाक्यों में स्थूलाक्षर शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।

क्रियाविशेषणों की रचना - क्रियाविशेषणों की रचना दो प्रकार से होती है-

(क) **मूल क्रियाविशेषण**-कुछ शब्द मूलतः क्रियाविशेषण ही होते हैं, अर्थात् किसी अन्य शब्द अथवा प्रत्यय के योग के बिना ही प्रयोग में लाए जाते हैं। जैसे-आज, कल, यहीं, इधर, ऊपर, नीचे, ठीक, चाहे आदि।

(ख) **यौगिक क्रियाविशेषण**-कुछ क्रियाविशेषणों की रचना किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय लगाकर होती है। इन्हें यौगिक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे-यथा + शक्ति = यथाशक्ति, प्रेम + पूर्वक=प्रेमपूर्वक, स्वभाव + तः - स्वभावतः, अन + जाने- अनजाने, दिन + रात- दिनरात, धीरे-धीरे, रातभर आदि।

विशेष- यद्यपि क्रियाविशेषण अविकारी शब्द हैं तथापि कभी-कभी क्रियाविशेषण शब्दों में भी कुछ परिवर्तन आ जाता है। जैसे-

(क) आम अच्छा पका है। लीची अच्छी पकी है।

(ख) कोट अच्छा धुला है। साड़ी अच्छी धुली है।

क्रियाविशेषण संबंधी कुछ महत्वपूर्ण बिंदु :

* कुछ शब्द तो मूलतः क्रियाविशेषण ही होते हैं। कल, आज, अब, तब, यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, हमेशा आदि। परंतु कुछ अन्य शब्दों में प्रत्यय लगाकर या समास द्वारा भी बनाए जाते हैं जैसे-अनजाने,

ध्यानपूर्वक आदि । ऐसे क्रियाविशेषण यौगिक क्रियाविशेषण कहलाते हैं ।

* अनेक शब्द ऐसे हैं जो विशेषण तथा क्रियाविशेषण दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं । अतः प्रयोग के आधार पर ही यह निर्णय करना चाहिए कि अमुक शब्द क्रियाविशेषण है या क्रियाविशेषण । जैसे—

१. मुझे **मीठा** केला बहुत पसंद है। (विशेषण)

२. वह बहुत **मीठा** गाती है । (क्रियाविशेषण)

३. वह एक **अच्छी** लड़की है । (विशेषण)

४. वह मुझे **अच्छी** लगती है । (क्रियाविशेषण)

* जिस प्रकार विशेषणों की विशेषता बताने वाले क्रियाविशेषण शब्द विशेषणों के पहले लगते हैं उसी तरह से प्रविशेषणों का प्रयोग भी क्रियाविशेषणों के पहले किया जाता है। जैसे -

१. बच्चा **बहुत** तेज़ी से दौड़ रहा था।

२. आज उसने **थोड़ा** कम खाया।

हिंदी में कालवाचक, रीतिवाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषणों का प्रयोग एक ही वाक्य में

संभव है जैसे -

वे शाम को कार से घर पहुँचेंगे ।

कालवाचक रीतिवाचक स्थानवाचक

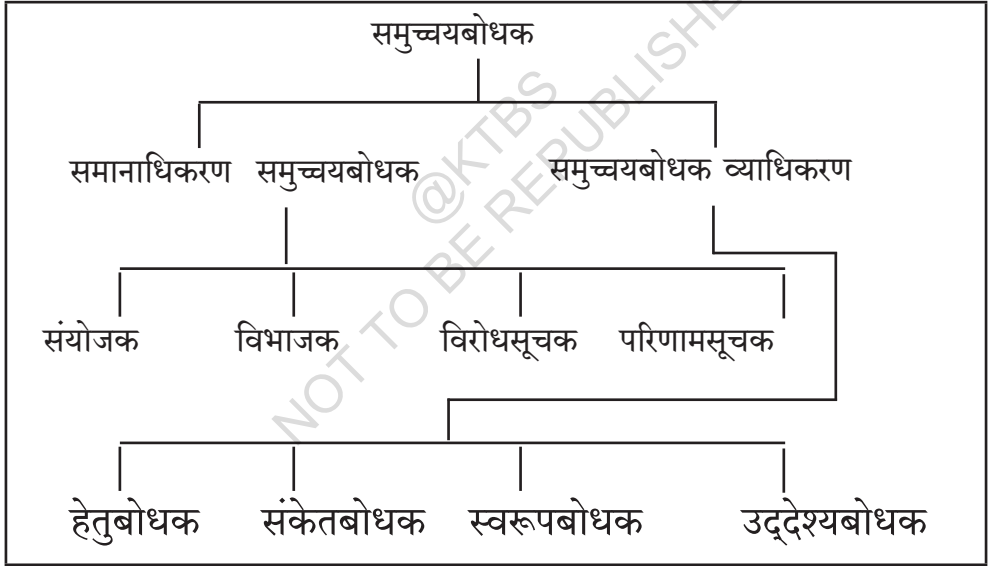
समुच्चयबोधक

जो अव्यय पद एक शब्द का दूसरे शब्द से, एक वाक्य का दूसरे वाक्य से अथवा एक वाक्यांश का दूसरे वाक्यांश से संबंध जोड़ते हैं, वे 'समुच्चयबोधक अव्यय' या 'योजक' कहालाते हैं। जैसे-

राधा आज आएगी और कल चली जाएगी।

समुच्चयबोधक के दो प्रमुख भेद हैं:

१. समानाधिकरण समुच्चयबोधक
२. व्याधिकरण समुच्चयबोधक



१. समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय के निम्नलिखित चार भेद हैं:

- (अ) संयोजक (ख) विभाजक (ग) विरोधसूचक (घ) परिणामसूचक
(क) संयोजक - जो अव्यय पद दो शब्दों, वाक्यांशों या समान वर्ग

केदो उपवाक्यों में संयोग प्रकट करते हैं, वे 'संयोजक' कहालाते हैं।
जैसे-और, तथा, एवं आदि।

(i) राम और श्याम भाई-भाई हैं।

(ii) इतिहास एवं भूगोल दोनों का अध्ययन करो ।

(iii) फुटवाल तथा हाकी दोनो मैच खेलूंगा ।

(ख) विभाजक या विकल्प-जो अव्यय पद शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों में विकल्प प्रकट करते हैं, वे 'विकल्प' या 'विभाजक' कहालाते हैं। जैसे-कि, चाहे, अथवा, अन्यथा, या, नहीं, तो ।

(i) तुम ढंग से पढ़ो अन्यथा फेल हो जाओगे ।

(ii) चाहे ये दे दो चाहे वो ।

(ग) विरोधसूचक-जो अव्यय पद पहले वाक्य के अर्थ से विरोध प्रकट करें, वे 'विरोधसूचक' कहालाते हैं। जैसे-पर, परंतु, किंतु।

(i) रोटियाँ मोटी किंतु स्वादिष्ट थीं ।

(ii) वह आया परंतु देर से।

(iii) मैं तो चला जाऊँगा, लेकिन तुम्हें भी आना पड़ेगा।

(घ) परिणामसूचक-जब अव्यय पद किसी परिणाम की ओर संकेत करता है तो 'परिणामसूचक अव्यय' कहालाता है। जैसे-इसलिए, अतएव, अतः, जिससे, जिस कारण।

(i) तुमने मना किया था इसलिए मैं नहीं आया ।

(ii) मैंने यह काम खत्म कर दिया जिससे कि तुम्हें आराम मिल सके।

२. **व्याधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय**—वे संयोजक जो एक मुख्य वाक्य में एक या अनेक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, 'व्याधिकरण समुच्चयबोधक' कहलाते हैं। जैसे—यदि मेहनत करोगे तो फल पाओगे।

व्याधिकरण समुच्चयबोधक के मुख्य चार भेद हैं।

- (i) हेतुबोधक या कारणबोधक,
- (ii) संकेतबोधक,
- (iii) स्वरूपबोधक,
- (iv) उद्देश्यबोधक।

(क) **हेतुबोधक या कारणबोधक**—इस अव्यय के द्वारा वाक्य में कार्य-कारण का बोध स्पष्ट होता है। जैसे—क्योंकि, चूंकि, इसलिए, कि, आदि।

- (i) वह असमर्थ है **क्योंकि** वह पढ़ता नहीं है।
- (ii) चूंकि मुझे वहाँ जल्दी पहुँचना है, **इसलिए** जल्दी जाना होगा।

(ख) **संकेतबोधक**—प्रथम उपवाक्य के योजक का संकेत अगले उपवाक्य में पाया जाता है। ये प्रायः जोड़े में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—जो.... तो, यद्यपि....तथापि, चाहे...पर, जैसे.....तैसे।

(i) **ज्योंही** मैंने दरवाजा खोला **त्योंही** बिल्ली अंदर घुस आई ।

(ii) **यद्यपि** वह बुद्धिमान है **तथापि** आलसी भी ।

(ग) **स्वरूपबोधक**-जिन अव्यय पदों को पहले उपवाक्य में प्रयुक्त शब्द, वाक्यांश या वाक्य को स्पष्ट करने हेतु प्रयोग में लाया जाए, उसे 'स्वरूपबोधक' कहते हैं । जैसे - यानी, अर्थात्, यहाँ तक कि, मानो आदि ।

(i) वह इतनी सुंदर है **मानो** अप्सरा हो ।

(ii) माँ ने कहा **कि** अब खाना खा लो ।

(घ) **उद्देश्यबोधक**-जिन अव्यय पदों से कार्य करने का उद्देश्य प्रकट हो, वे 'उद्देश्यबोधक' कहलाते हैं। जैसे-जिससे कि, ताकि आदि ।

(i) वह बहुत मेहनत कर रहा है **ताकि** सफल हो सके।

(ii) मेहनत करो **जिससे** कि प्रथम आ सको ।

संबंधबोधक अव्यय

जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य में दूसरे शब्दों से उसका संबंध बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक' या 'परसर्ग' कहते हैं। जैसे-

(i) स्मिता घर **के भीतर** बैठी है ।

(ii) शीत **के कारण** गरीब का बुरा हाल था।

यहाँ हम पाते हैं कि इन वाक्यों में 'के भीतर' तथा 'के कारण' शब्द संबंधबोधक अव्यय हैं। इन्हें परसर्गीय शब्द भी कहा जा सकता है। लेकिन संबंधबोधक अव्यय परसर्ग रहित भी होते हैं। जैसे-मैं रात भर जागता रहा। इस प्रकार संबंधबोधक अव्यय के दो रूप हमारे सामने आते हैं :

(क) परसर्ग सहित-के बारे, के समान, के सिवा । (ख) परसर्ग रहित-भर, बिना, पहले, मात्र, अपेक्षा ।

इस प्रकार-पहले, सामने, आगे, पास, परे, द्वारा, बिना ऊपर, नीचे, भीतर, अंदर, ओर, मध्य, बीच में, बाद, निकट, कारण, साथ, विरुद्ध, पश्चात्, सरीखा, प्रतिकूल, मात्र, उपेक्षा, मार्फत आदि संबंधबोधक अव्यय की कोटि में आते हैं।

अर्थ के अनुसार संबंधबोधक अव्यय के कुल आठ भेद हैं।

१. कालबोधक, २. स्थानबोधक, ३. दिशाबोधक,
४. साधनबोधक ५. विषयबोधक ६. सादृश्यबोधक,
७. मित्रताबोधक, ८. विरोधबोधक।

१. **कालबोधक**-जिन अव्यय शब्दों से काल का बोध हो, वे 'कालबोधक अव्यय' कहालाते हैं । जैसे- से पहले, के लगभग, के पश्चात्।

(i) ट्रेन समय से पहले आ गई ।

(ii) उसके जाने के लगभग एक छोटे बाद जाऊँगा।

२. **स्थानबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से स्थान का बोध हो, वे ‘स्थानबोधक अव्यय’ कहलाते हैं। जैसे—के पास, के समीप, से दूर।

(i) स्कूल के पास ही राजू का घर है।

(ii) तालाब के किनारे ही बगीचा है।

३. **दिशाबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से दिशा का बोध हो, उसे ‘दिशाबोधक अव्यय’ कहते हैं। जैसे—की ओर, के आस-पास।

(i) आग की ओर मत जाना।

(ii) घर के आस-पास ही रहना।

४. **साधनबोधक अव्यय**—जिन अव्यय शब्दों से साधन के बोध हो, उन्हें ‘साधनबोधक अव्यय’ कहते हैं। जैसे—के द्वारा, के ज़रिए, के मार्फत।

(i) आपके आने की सूचना श्याम के द्वारा मिली।

(ii) उसके ज़रिए यह काम होगा।

५. **विषयबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से विषय की जानकारी प्राप्त हो, वे ‘विषयबोधक अव्यय’, कहलाते हैं जैसे—के बारे, की बाबत आदि।

(i) गाँधीजी के बारे में बहुत कहा गया है।

(ii) मोहन की बाबत बात करने आया हूँ।

६. **सादृश्यबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से सादृश्य का बोध हो, वे ‘सादृश्यबोधक अव्यय’ कहलाते हैं। जैसे—के समान, की भाँति,

के योग्य, की तरह, के अनुरूप आदि ।

(i) गांधी जी **के समान** सत्यवादी बनो ।

(ii) आदर्श व्यक्तियों **की भाँति** जीवन जीओ ।

७. **मित्रताबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से मित्रता का बोध हो, वे ‘मित्रता बोधक अव्यय’ कहलाते हैं । जैसे—के अलावा, के बिना, के सिवा आदि ।

(i) मोहन **के सिवा** मेरा कौन है ।

(ii) सविता **के बिना** मैं नहीं जाऊँगा ।

८. **विरोधबोधक**—जिन अव्यय शब्दों से विरोध व्यक्त होता है, वे ‘विरोधबोधक अव्यय’ कहलाते हैं। जैसे—के विरुद्ध, के खिलाफ आदि ।

(i) उसके **विरुद्ध** मत बोले ।

(ii) मेरे **खिलाफ** कोई चुनाव नहीं लड़ेगा ।

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मय, हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, विषाद, आदि भावों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द ‘विस्मयादिबोधक अव्यय’ कहलाते हैं। इन शब्दों का वाक्य से कोई व्याकरणिक संबंध नहीं होता। अर्थ की दृष्टि से इसके मुख्य आठ भेद हैं :

१. विस्मयसूचक - अरे!, क्या!, सच! ऐं!, ओह!, हैं !

२. हर्षसूचक - वाह!, अहा!, शाबाश!, धन्य !

३. शोकसूचक - ओह!, हाय!, त्राहि-त्राहि!, हाय राम!
४. स्वीकारसूचक - अच्छा!, बहुत अच्छा!, हाँ-हाँ!, ठीक!
५. तिरस्कारसूचक - धिक् !, छिः! हट! , दूर !
६. अनुमोदनसूचक - हाँ-हाँ!, ठीक!, अच्छा !
७. आशीर्वादसूचक - जीते रहो !, चिरंजीवी हो! दीर्घायु हो !
८. संबोधनसूचक - हे!, रे! अरे, ऐ !

इन सभी के अलावा कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण, आदि का प्रयोग भी विस्मयादिबोधक के रूप में होता है. जैसे :

- | | | |
|---------|---|-------------------------------|
| संज्ञा | - | शिव, शिव!, हे राम! बाप रे ! |
| सर्वनाम | - | क्या! अच्छा!, धन्य!, ठीक! सच! |

पत्रों के प्रकार

पत्रों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

१. अनौपचारिक पत्र, २. औपचारिक पत्र।

१. अनौपचारिक पत्र - इन्हें मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

क) पारिवारिक - पत्र (ख) व्यावहारिक - पत्र।

(क) पारिवारिक - पत्र-ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों तथा संबंधियों को लिखे जाते हैं। ये पत्र व्यक्तिगत होते हैं तथा इन पत्रों में भेजने वालों तथा पाने वालों के बीच गहन आत्मीयता होती है। ये पत्र भावना से ओत-प्रेत होते हैं।

ख) व्यावहारिक - पत्र-ये पत्र मुख्य रूप से गुरु, मित्र, पड़ोसी और अन्य परिचित लोगों को भेजे जाते हैं। ये निजी नहीं होते बल्कि इसमें औपचारिकता तथा अनौपचारिकता का ध्यान रखा जाता है। निमंत्रण-पत्र, बधाई-पत्र, सहानुभूति-पत्र, अभिनंदन-पत्र तथा यात्रा का उल्लेख करने वाले पत्र इस श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

२. औपचारिक पत्र - इन्हें मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) आधिकारिक - पत्र (ख) व्यावसायिक-पत्र

(ग) कार्यालयीन-पत्र

(क) आधिकारिक पत्र - इसके अंतर्गत मुख्य रूप से वे पत्र आते हैं, जो जनता के सदस्यों की ओर से अधिकारियों को लिखे जाते हैं अथवा अधिकारियों के द्वारा जनता के सदस्यों के नाम लिखे जाते हैं।

अपने मित्र को उसकी वर्षगाँठ पर बधाई - पत्र

२१०, एम०जी० रोड,
फोर्ट, मुंबई।

दिनांक.....

प्रिय मित्र अनिल,
सप्रेम नमस्ते।

वर्षगाँठ के संबंध में तुम्हारा निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। मैं तुम्हारी वर्षगाँठ भूला थोड़े ही था; जो तुम्हें याद दिलानी पड़ी। तुम्हारे पत्र मिलने के पूर्व ही मैंने तुम्हें एक छोटा सा उपहार भेजा है। इस अकिंचन की उस छोटी सी भेंट को यदि तुमने सानंद स्वीकार किया तो मैं अपनी मित्रता को सार्थक समझूँगा। क्या करूँ! मैं इस समय तुमसे बहुत दूर हूँ। इच्छा तो थी कि एक बार आकर तुमसे मिल लूँ, लेकिन पिताजी के अस्वस्थ होने के कारण यह संभव नहीं हो सका है। मुझे विश्वास है कि तुम बुरा नहीं मानोगे। तुम्हें अमेरिका के प्रति सदा अकर्षण रहा है। इसी से संबंधित एक पुस्तक जिसमें वहाँ की सचित्र झलकियाँ भी हैं, मैंने तुम्हारे लिए सबसे उचित उपहार समझा। मुझे विश्वास है कि उस पुस्तक से तुम्हें अमेरिका से संबंधित अनेक जानकारीयाँ प्राप्त होंगी। तुम अपनी गर्मी की छुट्टियों की योजना के बारे में लिखना। अच्छा होगा कि तुम गर्मियों में मुंबई चले आओ। यहीं से कोई और कार्यक्रम बनाएँगे।

अपने माताजी और पिताजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। अपनी वर्षगाँठ पर पुनः एक बार मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करना।

तुम्हारा मित्र,
अशोक।

बस में छूटे हुए सामान का पता लगाने के लिए दिल्ली परिवहन
निगम के प्रबंधक को एक पत्र

रमेश वर्मा,
सी-12/38, कमला नगर,
दिल्ली।

दिनांक

सेवा में,
मुख्य प्रबंधक,
दिल्ली परिवहन निगम,
दिल्ली।

महोदय,
मैंने कल शाम अमृतसर से दिल्ली आने वाली 7 बजकर 30 मिनट की
बस पकड़ी थी। मुझे कनाॅट प्लेस उतरना था। बस रास्ते में खराब
हो जाने के कारण अपने निर्धारित समय से एक घंटा देर से पहुँची।
समय काफ़ी हो चुका था, इसलिए घबराहट में मैं मात्र एक ही अटैची
लेकर बस से उतर आया। मेरे साथ एक छोटा एयरवेज़ का बैग भी
था। उसका रंग गहरा नीला था। वह बैग मैं उसी बस में भूल आया।
सुबह मैं बस अड्डे गया भी था लेकिन उस बैग का कोई पता न
चला। कृपया आप उसे ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न करें। मैं आपका विशेष
आभारी रहूँगा। यदि मेरा बैग मिल जाए तो उसे उपर्युक्त पते पर
भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय,
रमेश वर्मा।

वाक्य-रचना

वाक्य: किसी भाव या विचार को पूरी तरह प्रकट करने वाली भाषा की छोटी इकाई को वाक्य कहते हैं। वाक्य में शब्द और पद-बंध (Phrases) रहते हैं। शब्दों और पद-बंधों के बीच एक सुनिश्चित और सार्थक संबंध होता है। वाक्य सरल और स्पष्ट होते हैं तो भाव या विचार बड़ी सुगमता से दूसरों तक पहुँचते हैं।

उपवाक्य : वाक्य एक संपूर्ण इकाई है। कभी-कभी एक वाक्य लंबा होता है और उसके साथ छोटे-छोटे वाक्य भी जुड़े होते हैं। ऐसे छोटे-छोटे वाक्यों को उपवाक्य कहते हैं। 'मुझे कल मैसूर जाना है'। यह एक पूर्ण वाक्य है। अब दूसरा वाक्य देखिए 'मुझे कल मैसूर जाना है और उसी दिन वहाँ से ऊटी जाना है'। यह दूसरा ही उपवाक्य है।

रचना के अनुसार वाक्य के प्रकार : वाक्य के तीन प्रकार या भेद हैं-सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य।

सरल वाक्य : सरल वाक्य में एक ही वाक्य होता है। वह छोटा होता है। उसमें कोई उपवाक्य नहीं होता। वह अपने आप संपूर्ण होता है। उदा: भीम बलवान है।

संयुक्त वाक्य : संयुक्त वाक्य में दो या तीन वाक्य होते हैं। पर पहला वाक्य प्रधान होता है। दूसरा या तीसरा वाक्य पहले वाक्य के सहायक बनते हैं। परन्तु वाक्य एक ही है। संयुक्त वाक्य का अर्थ है दो या दो से अधिक वाक्य एक साथ मिलकर पूर्ण अर्थ का बोध कराना।

उदा : भीम बलवान है और गुणवान भी है। छोटा वाक्य प्रधान वाक्य की मदद करके, उसकी विशेषता प्रकट करता है। पर दोनों वाक्य स्वतंत्र होते हैं।

मिश्र वाक्य : मिश्र वाक्य में दो वाक्य होते हैं। मगर दूसरा वाक्य पहले वाक्य पर आधारित रहता है। पहले वाक्य के बिना दूसरे वाक्य का अस्तित्व नहीं होता।

उदा: भीम बलवान है मगर क्रोधी है। यह स्पष्ट है कि 'मगर क्रोधी है' - 'भीम बलवान है' के बिना अधूरा है।

वाक्य-रचना सरल, स्पष्ट और सुबोध होनी चाहिए। चमकी-ले-भड़कीले शब्दों के योग से लंबे-लंबे वाक्य लिखे जायेंगे तो उन्हें समझना कठिन होगा। वाक्यों में मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग हो तो सोने में सुहागा। इसलिए विद्यार्थियों को छोटे-छोटे, सरल वाक्यों को लिखना चाहिए।
